Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

दुगुणं करेइ से पावं,
पूयणकामो विसण्णेसी।

जो पूजा का इच्छुक और असंयम का आकांक्षी होता है, वह दूना पाप करता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 7 • 21 - 27 नवंबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 19-11-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

कालूगणी की जन्मधरा पर चातुर्मास सुसंपन्न-गतिमान हुए ज्योतिचरण

नित्यानित्य संसार में आत्मकल्याण का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

छापर-देवाणी, ८ नवंबर, २०२२

कालू जन्म धरा छापर पर हरा-भरा चातुर्मास सुसंपन्न कर अखंड परिव्राजक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग ७:२१ बजे चातुर्मास स्थल से ज्यों ही प्रस्थित हुए छापर वासी हाथ जोड़े, सजल नेत्रों के साथ पूज्यप्रवर को रोकने का प्रयास कर रहे थे, किंतु जन-जन के कल्याण करने वाले तेरापंथ के अधिशास्ता सभी पर आशीष दृष्टि करते हुए अपनी अगली मंजिल के लिए गतिमान हो गए। ज्योतिचरणों का अनुगमन करते हुए छापरवासी उनके पीछे चल रहे थे।

लगभग ५ कि०मी० का विहार कर परम पावन देवाणी पधारे। छापरवासियों ने नम आँखों से पूज्यप्रवर को विदाई दी। पूज्यप्रवर का भंसाली ज्ञान मंदिर में विराजना हुआ।

मानवता के मसीहा ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी है। ध्रौव्य है, तो उत्पाद व्यय भी है। पदार्थ में ध्रुवता भी है और उत्पाद-व्यय भी है।

जैन दर्शन में बताया गया कि ये दुनिया नित्यानित्य है। केवल नित्यता या अनित्यता नहीं है। पदार्थ तो नित्य है, पर उसमें पर्याय परिवर्तन होता रहता है। हमारा जीवन अनित्य है, पर आत्मानित्य है। उम्र अनुसार बदलाव आता है।

उपाध्याय विनय विजय जी ने शांत सुधारस ग्रंथ में लिखा है कि हमारे देखते-देखते हमारे माईत, हमारे साथी भी चले गए हैं। ये सब देखने के बाद भी मन में शंका नहीं है कि मुझे भी एक दिन जाना पड़ेगा, मैं तो संसार के भोगों और प्रमाद में डूबा हुआ हूँ। इस अनित्य जीवन का भरोसा नहीं। इस अनित्य जीवन में नित्य (आत्मा) का कल्याण हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए।

बचपन में वैराग्य भाव आना अच्छी बात है, जैसे परम पूज्य कालूगणी को आया था। छापर की धर्मसंघ को ये देन है। हमने भी वहाँ चातुर्मास किया। कालूगणी हमारे माइतों के माइत थे। उनमें शास्ता सा अनुशासन और माता-पिता जैसे वात्सल्य था। कालूगणी से हमें दो गुरु मिले थे।

हमें अब आगे बढ़ना है। हम जीवन में धर्म के क्षेत्र में भी आगे बढ़ें। आज ये भंसाली जी के विद्या स्थान में आना हुआ है। भंसाली परिवारों में भी खूब धर्म की भावना बनी रहे। विद्या संस्थान के विद्यार्थियों में भी अच्छे संस्कार मिलते रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में भंसाली परिवार की बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। स्नेहलता दुगड़, मंजु देवी भंसाली, संतोष कुचेरिया, माणक सिंघी, पारसमल डोसी, छापर व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा ने अपनी श्रद्धा भावना व्यक्त की।

मुनि विकास कुमार जी ने भी अपने भाव श्रीचरणों में अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शेष पृष्ठ २ पर

✦ तुम दूसरों की बुराइयों को देखते हो। जरा आँख मूँद यह भी खोजो तुम्हारे में कितनी बुराइयाँ हैं?
—आचार्यश्री महाश्रमण

चेतना की निर्मलता के विकास का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, १३ नवंबर, २०२२

सबकी आशाओं को यथानुकूलता पूर्ण कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी का जैन विश्व भारती का तीसरे दिन का प्रवास और हरियाणा क्षेत्र के श्रावकों की परमपूज्य चरण में हरियाणा पधारने की पुरजोर प्रार्थना आज कई क्षेत्रों में चातुर्मास संपन्न कर साध्वीवृंदों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। सरदारशहरवासियों ने भी पूज्यप्रवर से चातुर्मास फरमाने की अर्ज की।

करुणा निधान परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है—आदमी का जीवन संयम-प्रधान होता है, तो वह सुख प्राप्त कर सकता है। जीवन में असंयम का प्राधान्य होता है, तो मानना चाहिए दुःख प्राप्ति की तैयारी है। हो सकता है, दुःख प्राप्त करना शुरू हो गया हो।

अणुव्रत में संयम, नैतिकता और अहिंसा की बात है। शास्त्रकार ने पाँच आश्रवों के बारे में बताया है। इन पापकारी प्रवृत्तियों को छोड़ने वाला महाव्रती साधु होता है। दूसरा मार्ग है—अणुव्रत—छोटे-छोटे नियम। इनको गृहस्थ आसानी से स्वीकार कर सकता है। मनुष्य जीवन में त्याग, तपस्या और संयम हो तो यह मानव जीवन सफल-सुफल हो सकता है। मानव जीवन पापाचार से दुष्फल न बने।

अभयदान सबसे बड़ा दान है। साधु अभयदान दाता होता है। हिंसा का परित्याग कर देना, आत्मा को निर्मल बनाने का एक उपाय है। श्रावक बड़ा झूठ न बोले, बड़ी चोरी न करे। न्याय के लिए अन्यायपूर्ण कार्य नहीं करना चाहिए। हमें चेतना की निर्मलता के विकास का प्रयास करते रहना चाहिए।

सरदारशहर की ओर से प्रतिनिधि के रूप में सुजानमल दुगड़ ने चातुर्मास व मर्यादा महोत्सव फरमाने की अर्ज की। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि साध्वी सुमतिप्रभा जी को सलक्ष्य सरदारशहर भिजवाया था।

हरियाणा से लगभग १००० श्रावक-श्राविकाएँ हरियाणा प्रांतीय सम्मेलन के लिए आए हैं। पदमचंद जैन ने अपनी भावना-अर्ज श्रीचरणों में निवेदन किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि जब भी अनुकूलता होगी तब यथासंभव तथा हरियाणा की विस्तृत यात्रा करने का भाव है। उस यात्रा में कम से कम १०८ दिन हरियाणा में विचरने का भाव है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की ११ पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह साहित्य पूज्यप्रवर के करकमलों में लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ये ११ पुस्तकें लोकार्पित हुई हैं। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का यह ५० वर्षों का कार्यकाल का संपन्नता का अवसर भी आया। उनमें एक वैदुष्य भी था। व्यक्तित्व और कर्तृत्व भी अपने ढंग का था। यह साहित्य पाठक व अन्यजनों को प्रेरणा देने वाला, सन्मार्ग बताने वाला सिद्ध हो। जिन्होंने श्रम किया है, उनका श्रम भी सार्थक हो। जैविभा धार्मिक आध्यात्मिक कार्य करती रहे।

अमृतवाणी के संस्थापक जेसराज सेखाणी का जीवन-वृत्त ग्रंथ 'गाथा पुरुषार्थ की' का पूज्यप्रवर के चरणों में लोकार्पित किया गया। सेखाणी जीवन के सौवें वर्ष में चल रहे हैं। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यह ग्रंथ जेसराज सेखाणी के विषय में है। ये अपने ढंग के व्यक्ति हैं। आश्चर्य की बात है कि सौवें वर्ष का आदमी उठ-बैठकर वंदना करते हैं। ये धार्मिक साधना करते रहें। इन्होंने धर्मसंघ के गुरुओं की वाणी को सुरक्षित रखने का कार्य किया है, जो अपने आपमें विशिष्ट है। चित्त में समाधि रहे, साधना चलती रहे। सुखराज सेठिया ने इस ग्रंथ के बारे में जानकारी दी। सरिता, संगीता सेखानी ने जीवन यात्रा के बारे में बताया।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों में सलिल लोढ़ा ने नेमचंद, जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पानी देवी सेखानी की स्मृति में वर्ष-२०२१ का संघ सेवा पुरस्कार शासनसेवी मूलचंद नाहर को प्रदान किया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मूलचंद नाहर एवं शशिकला नाहर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

लाडनूं सेवा केंद्रों में सेवादायी मुनि विजयकुमार जी, मुनि तन्मयकुमार जी, साध्वी प्रबलयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वी सुमतिप्रभा जी, साध्वी उदितयशा जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। साध्वी स्वस्तिकश्री जी ने शासनमाता के ग्रंथों के बारे में जानकारी दी।

महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने लाडनूं स्थित अभ्युदय भवन के स्थान पर उपासक श्रेणी का उपासक साधना केंद्र का पुनर्निर्माण करवाने की घोषणा की। पूज्यप्रवर ने प्रातःकाल वहाँ मंगलपाठ भी सुनाया था। उपासक श्रेणी के प्रभारी जयंतीलाल ने इसे बनाने का दायित्व लिया है। सचिवालय को नया बनाने के लिए रमेश बोहरा ने आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की। राजेंद्र खटेड़ ने अभातेयुप की ओर से मूलचंद नाहर का सम्मान किया। उपासक श्रेणी को पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ध्वज हस्तांतरण के साथ बायतू व्यवस्था समिति ने संभाला दायित्व

छापरवासियों में त्याग-संयम रूपी रमणीयता बनी रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ८ नवंबर, २०२२

७४ वर्ष के पश्चात छापर में आचार्यप्रवर के चातुर्मास का अंतिम दिवस, चातुर्मासिक पक्खी का दिवस। चातुर्मास संपन्नता के उपलक्ष्य में मंगलभावना समारोह में छापरवासी अपने आराध्य से एक ही अरज कर रहे थे कि हमें संभालने में देर मत करना, बेगा पधारज्यो।

समता के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने छापर चातुर्मास काल में अंतिम मंगल उद्‌बोधन में पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य जन्म एक प्रकार का वृक्ष है। इस वृक्ष के फल लगें, ऐसा प्रयास करना चाहिए। एक फल बताया गया है—जिनेंद्र पूजा। अर्हतों की भाव पूजा करो, स्मरण भक्ति करो। दूसरा फल बताया गया है—गुरु पर्युपासना करो। तीसरा फल है—सत्वानुकंपा-प्राणियों के प्रति दया का भाव। चौथा फल है—शुभ पात्र दान, पाँचवाँ फल है—गुणानुराग, छठा फल है—आगम का श्रवण करो।

चातुर्मास ऐसा समय है, इन छः फलों को पुष्ट करने का। धार्मिक साधना विशेष रूप से की जा सकती है। आत्मा को कल्याणमय बनाने का प्रयत्न किया जा सकता है। छापर चातुर्मास तो परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा घोषित किया हुआ था। पर क्रियान्विति गुरुदेव के काल में नहीं हो सकी। स्थूल भाषा में एक कर्जा सा था जो पूरा हो रहा है। अच्छा तो होता कि पूज्य गुरुदेव के साथ यहाँ चातुर्मास करता, पर नियति का योग है।

छापर पूज्य कालूगणी से जुड़ा क्षेत्र है और सेवा केंद्र भी यहाँ वर्षों से चल रहा है। आज चातुर्मास संपन्न हो रहा है। श्रावकों का व्यवस्था में श्रम भी लगा है। छापर में चातुर्मास हो, इस मुद्दे को उठाने वाला भी उन वर्षों में, मैं ही था। छापर ने बात को पकड़ा और निरंतर प्रयास करते-करते फरमाना भी हो गया।

जैसे कुमार श्रमण केशी ने प्रति बोध दिया था कि रमणीय बनकर अरमणीय मत बन जाना, वैसे ही छापर के लोगों में धार्मिक भावना बनी रहे। आज अंतिम अहोरात्र है। छापर के लोगों में त्याग-संयम की रमणीयता बनी रहे। मैं अपने आपको कुछ अंशों में कुमार श्रमण केशी मान लूँ तो आप मेरे लिए राजा परदेशी जैसे हो। मेरा चातुर्मास का अंतिम संदेश देना चाहता हूँ कि जीवन में रमणीयता धर्म, संयम, अहिंसा के रूप में आ जाए। धर्म की चेतना पुष्ट बनी रहे। छापर के लोगों में अहिंसा, नैतिकता की चेतना पुष्ट बनी रहे।

मुझे पूरे संयम पर्याय में पहली बार छापर में चातुर्मास करने का अवसर मिला है। गुरुदेव ने सेवा केंद्र की सेवा में तो मुझे नहीं भेजा पर छापर चातुर्मास करने का मौका प्राप्त हुआ। मैं पूज्य कालूगणी का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूँ। अब हमें छापर से कल विदाई लेनी है। सभी साधु-साध्वियों की ओर से हम खमतखामणा करते हैं। छापर का अच्छा चातुर्मास हुआ है। छापर का चातुर्मास हरे-भरे पेड़ के समान कहा जा सकता है।

छापर की जनता ने अनेक रूपों में श्रम-शक्ति का योगदान लगाया है। अच्छा चातुर्मास हमारा संपन्न हो रहा है। आप सबमें खूब चित्त समाधि बनी रहे। खूब शांति बनी रहे। खूब अच्छा कार्य करते रहें। धर्म की भावना भी बनी रहे। कल प्रातः हम यहाँ से विहार कर रहे हैं। हमारे धर्मसंघ में गुणों से युक्त साधु या सिद्ध पूजनीय हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ अनेक गतिविधियों वाला धर्मसंघ है। कितने कार्यक्रम पूज्यप्रवर की सन्निधि में चले। पूज्यप्रवर ने कितनों को प्रतिबोध प्रदान करवाया है। आचार्यप्रवर के प्रवचन अध्यात्म रस से ओत-प्रोत होते हैं। इस कारण वे आम जनता के आकर्षण होते हैं। पूज्यप्रवर के सूत्रों से हम आत्मा को निर्मल बना सकते हैं। आचार्यप्रवर ने छापर को आध्यात्मिक प्रकंपनों से ओत-प्रोत बनाया है।

पूज्यप्रवर की मंगलभावना समारोह में व्यवस्था समिति अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, विजयसिंह सेठिया (अध्यक्ष स्थानीय सभा), लक्ष्मीपत नाहटा, रतनलाल बैद, दिलीप मालू, निर्मल दुधोड़िया, कुसुम बैद, चमन दुधोड़िया, बजरंग डोसी, प्रथम नाहटा, बंशीलाल बोथरा, शांति दुधोड़िया, ज्ञानशाला चंदा देवी नाहटा, जीवनमल मालू, वीरेंद्र सुराणा, राहुल दुधोड़िया, भाविका दुधोड़िया, विमल, हुलास चोरड़िया, राकेश दुधोड़िया, बाबूलाल सारड़ा, सूरजमल नाहटा आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम में तेरापंथ कन्या मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत विद्यालय में विद्यार्थियों आदि ने गीत के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में बायतु मर्यादा महोत्सव दायित्व का ध्वज हस्तांतरण हुआ। बायतु निवासियों ने गीत से आमंत्रण भावना प्रस्तुत की। पूज्यप्रवर ने बायतु निवासियों को मंगलपाठ सुनाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी के १०६वें जन्मोत्सव के आयोजन

गुरुदेव श्री तुलसी थे विकास पुरुष महामानव

साहूकारपेट

तेरापंथ भवन में आचार्यश्री तुलसी का जन्मोत्सव अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आगम साहित्य में चार प्रकार के मेघों का वर्णन मिलता है। गुरुदेवश्री तुलसी चतुर्थ मेघ के समान थे जो फसल उत्पन्न करना भी जानते थे और निष्पन्न करना भी जानते थे। आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ की संपदा को बढ़ाया। विकास के शिखर पर आरोहित किया।

साध्वीश्री जी ने गुरुदेव श्री तुलसी के श्रीचरणों में बिताए स्वर्णिम उपासना एवं प्रेरक प्रसंगों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें पुण्यशाली प्रभावक आचार्यों का सान्निध्य प्राप्त होता रहा है। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का मार्गदर्शन हमारी साधना को फलवान बना रहा है।

इस अवसर पर शासनश्री श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० पुखराज जीरावला परिवार को तेरापंथी सभा द्वारा 'चंदादेवी डागा संस्कार पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उगमराज सांड, तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी, अणुव्रत समिति की ओर से स्वरूप दांती, जोधपुर अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष अनिता बरड़िया महिला मंडल पूर्वाध्यक्ष कमला गेलड़ा, तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड साहूकारपेट के अध्यक्ष विमल चिप्पड़ ने भाव व्यक्त किए। जय तुलसी मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। नेपाल से समागत ज्योति बोथरा ने मधुर संगान किया। तेमम ने गुरुदेवश्री तुलसी के जीवन-दर्शन को सुंदर शब्द-चित्र के द्वारा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री अशोक खतंग ने किया।

कांदिवली

आचार्यश्री तुलसी का १०६वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में तेरापंथ भवन, कांदिवली में साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि अणुव्रत के माध्यम से आचार्य तुलसी ने आचारणात्मक धर्म को जो स्वरूप प्रतिपादित किया उसे सुन-समझकर नास्तिकों ने भी अपने आपको आस्तिक कहते हुए गौरव का अनुभव किया।

जाति, संप्रदाय, वर्ग, वर्ण आदि से ऊपर उठकर अणुव्रत के रूप में उन्होंने जिस धर्म का प्रतिपादन किया वह मानवता का पथदर्शक है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी व्यक्तित्व निर्माण की टकशाल थे। उन्होंने अनगिनत लोगों को अध्यात्म के राजपथ पर बढ़ने का आह्वान किया।

इस अवसर पर साध्वी लावण्यप्रभा जी ने गीत एवं साध्वी कुंदनयशा जी ने कविता के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। कांदिवली तेरापंथ सभा की ओर से अध्यक्ष पारसमल दुगड़ ने आचार्य तुलसी के अवदानों की चर्चा की। मलाड़ सभा के अध्यक्ष इंद्रमल कच्छारा ने भी अपनी प्रस्तुति दी। स्नेहलता चोरड़िया, शांति पुगलिया, वीणा श्यामसुखा आदि ने प्रासंगिक रूपों में अपनी अभिव्यक्ति दी।

अणुव्रत समिति के स्थानीय संयोजक प्रकाश हिरण ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्थानीय महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत गीत से हुआ। महिला मंडल की अध्यक्षा रचना हिरण ने नारी जाति की अस्मिता को प्रतिष्ठित करने में आचार्यश्री तुलसी द्वारा किए गए प्रयासों की स्मृति करते हुए श्रद्धा समर्पित की। संचालन विमला देवी दुगड़ ने किया।

श्यामनगर

आचार्यश्री तुलसी का १०६वाँ जन्म दिवस भिक्षु साधना केंद्र श्यामनगर में शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी कनकश्री जी ने आचार्यश्री के बारे में विशेष वक्तव्य दिया तथा उनके विभिन्न अवदानों के बारे में संक्षिप्त में चर्चा की।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने कहा कि वर्तमान में अणुव्रत की प्रासंगिकता को गौण नहीं किया जा सकता। अणुव्रत रूपी मशाल से हर परिस्थिति से सुगमता से बाहर निकलकर सफलतम जीवन जीया जा सकता है।

आचार्यश्री तुलसी के जन्मोत्सव को तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन में रात्रि को धम्म जागरण भी किया गया।

सूरत

आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर तेरापंथ भवन, उधना में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक विरल महापुरुष थे। वे एक धर्मसंघ के आचार्य थे, लेकिन उनका चिंतन किसी एक धर्मसंघ के लिए सीमित नहीं था, बल्कि बहुत ही विशाल और व्यापक था। उन्होंने समग्र समाज एवं संपूर्ण राष्ट्र के नैतिक उत्थान का बीड़ा उठाया।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि आचार्यश्री तुलसी मानव नहीं महामानव थे। उन्होंने अणुव्रत के रूप में नैतिकता का शंखनाद किया। अणुव्रत सभ्यता का आईना है। समाज सुधार का पथदर्शन है। साध्वी आराधनाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के रूप में निर्विशेषण धर्म का प्रवर्तन किया। अणुव्रत एक ऐसी विचार क्रांति बन गई, जिसकी गूँज गरीब की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक सुनाई देती रही।

साध्वी आलोकप्रभा जी ने गीतिका के द्वारा आचार्यश्री तुलसी का गुणानुवाद किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के परामर्शक अर्जुन मेड़तवाल ने किया। तेमम, उधना की बहनों ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

भीलवाड़ा

प्रज्ञा भारती महावीर कॉलोनी, भीलवाड़ा में आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर मुनि पारस कुमार जी ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात करते हुए तेरापंथ के अस्तित्व को एक नई पहचान दी। मुनि पारस कुमार जी के १३ की तपस्या निरंतर गतिमान है। अपने भावों की अभिव्यक्ति में कहा कि संसार समुद्र से तरने के लिए प्रभु का आशीर्वाद और सबका सहयोग चाहिए।

मुनि शांतिप्रिय जी ने कहा कि आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अवदान से जन-कल्याण हो रहा है और तेरापंथ धर्मसंघ उच्चता के शिखर पर है। मुनि पारस कुमार जी के ३६वें दीक्षा दिवस एवं १३ की तपस्या के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

कार्यक्रम के प्रथम चरण अणुव्रत दिवस के रूप में समायोजित हुआ। अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा की अध्यक्षा आनंदबाला टोडरवाल ने स्वागत भावों के साथ ही आचार्य तुलसी की अभिवंदना में श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति दी। राजस्थान राज्य प्रभारी अभिषेक कोठारी द्वारा अणुव्रत गीत संगान से कार्यक्रम की शुरुआत की। अणुव्रत महासमिति के पूर्व महामंत्री संपत सामसुखा ने अणुव्रत दिवस पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति मंत्री राजेश चोरड़िया ने किया।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में तेरापंथी सभा संस्था के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि कैलाश तिवारी ने कहा कि तुलसी ने अपना पूरा जीवन परमार्थ के लिए जीया, अंतिम समय तक भी उन्होंने अपनी श्रम शक्ति एवं समय का नियोजन जन-कल्याण के लिए किया।

सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने आचार्य तुलसी एवं मुनि पारस कुमार जी की तपस्या की अभिवंदना में भावों की प्रस्तुति दी। उसी क्रम में तेमम अध्यक्षा मीना बाबेल, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, टीपीएफ अध्यक्ष करण सिंह सिंघवी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं मुनिश्री के संसारपक्षीय मामा प्रो० हरकलाल आंचलिया, बहन निर्मला भलावत ने आचार्य तुलसी अभ्यर्थना एवं तपस्या की अनुमोदना में विचार व्यक्त किए।

आचार्य तुलसी सेवा संस्थान प्रज्ञा भारती के अध्यक्ष अनिल चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि समागत मुख्य अतिथि का सभा-संस्था, महिला मंडल एवं अणुव्रत समिति की ओर से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री योगेश चंडालिया ने किया। सभा सहमंत्री लक्ष्मीलाल झाबक ने प्रश्नोत्तरी प्रस्तुति दी और सभा की ओर से सभी का आभार ज्ञापन किया।

किशनगढ़

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री तुलसी का १०६वाँ जन्मोत्सव अणुव्रत दिवस का कार्यक्रम मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के सान्निध्य में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि किशनगढ़ विधायक सुरेश टाक थे। साथ ही पार्षद सुशील अजमेरा एवं पंकज पहाड़िया भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि आचार्य तुलसी का युग मानवीय अभ्युदय का युग था। उन्होंने मानवता के उत्थान में जो अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया था। उससे पूरे भारत में नैतिक और चारित्रिक उन्नयन का वातावरण निर्मित हुआ।

श्रमण संघीय डॉ० साध्वी राजमती जी ने मरुधर केशरी मुनि मिश्री मल जी एवं आचार्य तुलसी के मिलन प्रसंगों की चर्चा करते हुए कहा कि अणुव्रत जो छोटे-छोटे व्रतों के द्वारा व्यक्ति का जीवन संयमित हो जाता है। श्रेष्ठ मानव के लिए आवश्यक है कि वह समन्वय, सद्भाव के वातावरण का निर्माण करें। भगवान महावीर की तीन धाराओं का मिलन यानी तेरापंथी, स्थानकवासी तथा मूर्तिपूजक का मिलन अपने आपमें महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

मूर्तिपूजक संप्रदाय से साध्वी संयमश्री जी ने गुरु की महिमा का व्याख्यान करते हुए आचार्य तुलसी को राष्ट्र का महान संत बताया।

मुनि सुबोध कुमार जी व साध्वी राज ऋद्धि जी ने विचारों की माध्यम से प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम का आरंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष आर०पी० जैन, के०सी० दवानी, सुरेश जम्मड़, सुमन डोशी, सुरेश घोड़ावत, ज्ञानशाला के बच्चों एवं तेयुप ने अपनी भावनाएँ गीतिका के माध्यम से व्यक्त की। इस अवसर पर किशनगढ़ रत्न से सम्मानित होने पर मालचंद सुराणा का सम्मान तेरापंथी सभा द्वारा विधायक सुरेश टाक ने किया।

साथ ही अणुव्रत चौक का अनावरण विधायक सुरेश टाक द्वारा किया गया। सुरेश टाक ने इस अवसर पर कहा कि मेरे लिए बहुत गौरव की बात है कि मुझे जैन साधु-साध्वियों के सान्निध्य में आने का मौका मिला। तेरापंथी सभा मानव हित के लिए जो कार्य कर रही है, वह सराहनीय है। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री डॉ० अजय कवाड़ ने किया।

टी-दासरहल्ली

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सन्निध्य में टी-दासरहल्ली तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी का १०६वाँ जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में आयोजित किया गया। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात, तेमम द्वारा तुलसी अष्टकम् के संगान से मंगलाचरण किया गया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में बहुआयामी विकास के भाग्यविधाता थे आचार्य तुलसी। आपका व्यक्तित्व व कर्तृत्व अनुपमेय था। आपके पारगामी प्रज्ञा में भविष्य प्रतिभाषित था, इसीलिए देश की स्वतंत्रता की खुशहाली में अणुव्रत का प्रवर्तन कर नैतिकता, धार्मिक सद्भावना तथा सौहार्द का संदेश दिया।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि जब-जब समय बदलता है, मूल्य बदलते हैं, तब कोई-न-कोई महापुरुष इस धरती पर अवतरित होते है। आचार्य तुलसी ने मानवीय चेतना में ऊर्जा संप्रेषित कर युग-दर्शन में नया अध्याय लिखा तथा अणुव्रत जीवनशैली प्रासंगिक है इस बात को हर दिल तक पहुंचाना।

साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। साथ-साथ साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी ने भक्तिपरक भावनाएँ व्यक्त की। बडोदा तेरापंत सभा के पूर्व अध्यक्ष राजेशजी मेहता, संपत मेहता, जिनेश मेहता, राजाजीनगर तेयुप पूर्व अध्यक्ष चंद्रेश मांडोत, सभा संस्थापक अध्यक्ष लादुलाल बाबेल, सभा अध्यक्ष नवरतन गाँधी, आभातेयुप से राकेश दक, तेयुप अध्यक्ष दिलिप पोखरणा ने विचार रखे। आभार सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया। संचालन सभा पूर्व मंत्री कन्यालाल गाँधी ने किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा ट्रस्ट परिवार, तेमम, तेयुप परिवार एवं दासरहल्ली व निकट क्षेत्रों से श्रावक-श्रविकाओं की उपस्थिति रही। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

✦ सत्य को स्वीकारने का साहस भी महानता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

उत्सव रिश्तों का प्रेम देवरानी-जेठानी का कार्यशाला

कानपुर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित, तेममं, कानपुर द्वारा साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी' की कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोचार से हुआ। महिला मंडल की बहनों ने गीत से मंगलाचरण किया। सर्वप्रथम तेममं अध्यक्ष शालिनी बुच्चा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए इस कार्यशाला के महत्त्व को बताया।

सुधा बुच्चा और शालिनी बुच्चा की जोड़ी ने एक लघु नाटिका के माध्यम से आज के युग में संयुक्त परिवार के महत्त्व को दर्शाया। तीन देवरानी-जेठानी की जोड़ियाँ–सुधा-शालिनी, अंशु-रश्मि, सुशीला-सुमन ने परिषद के समक्ष अपने-अपने परिवारों के अनुभव साझा किए। तीनों जोड़ियों को पुरस्कृत किया गया। साध्वी भावनाश्री जी ने कहा कि सुखी परिवार वो है, जहाँ सभी सदस्य एक-दूसरे के विचारों को सम्मान और महत्त्व देते हैं।

साध्वी डॉ० पीयूष प्रभा जी ने कहा कि देवरानी-जेठानी परिवाररूपी सिक्के के दो पहलू हैं, जिनमें समन्वय, सहनशीलता और समर्पण होना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन शालिनी बुच्चा ने किया।

भीलवाड़ा।

अभातेममं द्वारा निर्देशित तेममं द्वारा साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री जी के नवकार महामंत्र उच्चारण से हुई। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि सुमधुर रिश्तों की बुनियाद है विनय, वात्सल्य, प्रेम, सामंजस्य, प्रसन्नता, समता से गुण जहाँ मिलते हैं, वो रिश्ते गहरे होते हैं। साध्वीश्री जी ने देवरानी-जेठानी के पवित्र पावन रिश्तों में भावना की महत्ता उजागर की। सभी जोड़ियों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना। राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने भाव व्यक्त किए।

महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने ऐसी कार्यशाला को समाज उपयोगी बताया। कार्यशाला में देवरानी-जेठारी की लगभग दस जोड़ियाँ सभी का आकर्षण का केंद्र रहीं।

देवरानी-जेठानी की जोड़ियों को कार्यसमिति टीम, संरक्षक, परामर्शकगण द्वारा सम्मानित किया गया। एक रोचक ज्ञानवर्द्धक गेम देवरानी-जेठानी के लिए आयोजित किया गया, जिसमें प्रथम जोड़ी रही संजू-रीना चोरड़िया, द्वितीय जोड़ी रही आशा-अभिलाषा बाबेल, तृतीय स्थान पर शशि-अनामिका रांका की जोड़ी रही। एक गेम बहनों के बीच कराया जिसमें प्रथम मीना बाबेल, द्वितीय रोशनी बाफना एवं तृतीय सुमन दुगड़ रही। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि टीपीएफ के राष्ट्रीय सहमंत्री नवीन वागरेचा की उपस्थिति रही। अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण, वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं के साथ सभी की उपस्थिति से कार्यशाला सफल रही। कार्यक्रम का संचालन कार्यशाला संयोजिका स्नेहलता झाबक एवं आभार कोषाध्यक्ष सुमन दुगड़ ने किया। कार्यशाला में प्रेक्षा मेहता, टीना मेहता, अमिता बाबेल का अच्छा सहयोग रहा।

Aid to Assisting hands कार्यशाला का आयोजन

उधना।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'निर्माण' योजना के अंतर्गत 'Aid to Assisting Hands' कार्यशाला का आयोजन साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में महिला मंडल किया गया। कार्यक्रम में अभातेममं महामंत्री मधु देरासरिया की उपस्थिति एवं एबीटीएमएम गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी लब्धिश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता नीलम जैन, स्वाति देवनानी रहे।

अध्यक्ष जशु बाफना ने सभी का स्वागत एवं आगंतुक होम हेल्पर्स का एवं मुख्य वक्ता का धन्यवाद ज्ञापित किया।

मुख्य वक्ता ने होम हेल्पर्स के बच्चों को शिक्षित करना, अपने पर होने वाला उत्पीड़न एवं स्वास्थ्य का प्रशिक्षण देते हुए सफाई एवं उसकी अहमियत के बारे में बताया।

अभातेममं महामंत्री मधु देरासरिया ने बताया कि हमें हमेशा सभी का शुक्रिया करना चाहिए और सभी होम हेल्पर्स की जिज्ञासा का भी समाधान किया।

साध्वी हेमयशा जी ने बताया कि हमें हमारे जीवन में कभी भी नशा नहीं करना चाहिए और स्वस्थ जीवन जीना है तो हमारे आसपास साफ-सफाई जरूरी है। कार्यक्रम में महिला मंडल के पदाधिकारी, अभातेममं गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना व महिला मंडल की बहनें उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल कार्यकारिणी सदस्य ज्योति कोठारी एवं आभार महिला मंडल मंत्री सुनीता चोरड़िया ने किया।

कार्यक्रम में लगभग ८२ होम हेल्पर्स एवं ४५ महिला मंडल के सदस्य उपस्थित रहे एवं सभी होम हेल्पर्स को उधना महिला मंडल द्वारा सम्मानित किया गया।

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं आरआर नगर द्वारा निर्माण परियोजना अंतर्गत aid to Assisting Hands का तीसरा चरण फ्री आई चेकअप कैंप दिव्यदृष्टि आई हॉस्पिटल के सहयोग से आयोजन किया गया।

आई चेकअप कैंप का शुभारंभ साध्वी शिवमाला जी के नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। होम हेल्पर्स बहनों एवं उनके परिवार वालों का परीक्षण कराया तथा उन्होंने डॉक्टर से अपनी समस्याओं का समाधान भी पाया।

इस कैंप में ६५ व्यक्तियों के आँखों का परीक्षण करवाया गया तथा जरूरत की दवाइयाँ व चश्मे भी वितरण किए गए। कैंप के आयोजन में डॉ० प्रकाश जैन का सहयोग रहा। मंडल द्वारा डॉ० प्रकाश जैन एवं स्टॉफ का सम्मान किया गया।

अध्यक्ष लता बाफना ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं कैंप के समायोजन में मंत्री सीमा जैन का विशेष सहयोग रहा।

सहमंत्री मंजु बोथरा, वंदना भंसाली, आशा लोढ़ा, दीपाली गोलछा, मधु कोठारी, सपना छाजेड़, ज्योत्सना छाजेड़ का सहयोग रहा।

गर्भ शिशु संस्कार प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के तहत 'गर्भ शिशु संस्कार प्रशिक्षण' कार्यक्रम का आयोजन तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री शिवमाला जी द्वारा नमस्कार मंत्र से हुई। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

अध्यक्षा लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। मुख्य वक्ता डिम्पल जैन ने बताया कि नवागत के स्वागत में दंपति को शादी के बाद से ही तैयारी करनी चाहिए। माता-पिता को खान-पान, रहन-सहन पर ध्यान देना चाहिए एवं विशेष रूप से माता को गर्भ से ही शिशु को संस्कार भावों के माध्यम से देते रहना चाहिए, ताकि वह एक स्वस्थ व संस्कारी बच्चे को जन्म दे सके। अभातेममं की कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया ने शिशु के पालन-पोषण में माँ की अहम भूमिका बताई।

सभा मंत्री हेमराज सेठिया ने अपने विचार रखे। बहनों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष छतर सेठिया, महिला मंडल की संरक्षिकाएँ, पदाधिकारी बहनें एवं भाई-बहनों की उपस्थिति रही। मुख्य वक्ता का परिचय श्वेता कोठारी ने दिया। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। धन्यवाद आशा लोढ़ा ने ज्ञापित किया।

उड़ान - उमंगों की

भीलवाड़ा।

अभातेममं द्वारा निर्देशित तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल, भीलवाड़ा के द्वारा 'उड़ान-उमंगों की' अक्टूबर माह की कार्यशाला 'शेयर एंड केयर' का आयोजन किया गया। कन्या मंडल द्वारा तेजसिंह सर्कल के पास बस्ती में जाकर बच्चों व बड़े बुजुर्गों में कपड़े, स्वेटर बाँटकर और उनके साथ समय व्यतीत कर उनकी दिनचर्या के बारे में जानकारी ली।

कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल, मैना कांठेड, कन्या मंडल प्रभारी अंकिता कावड़िया, संयोजिका मनीषा हिरण, सह-संयोजिका प्रेक्षा नौलखा एवं अन्य कन्याओं का अच्छा सहयोग मिला। साथ ही केंद्र द्वारा आयोजित कार्यशाला में किशोर मंडल ने भी फूड पैकेट्स बाँटें। महिला मंडल मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि किशोर मंडल संयोजक नयन रांका एवं सह-संयोजक मुदित रांका, रिशित चोरड़िया के द्वारा बच्चों को गेम्स भी खिलाए गए। इस कार्यशाला को सफल बनाने में जॉय मेकर्स फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा।

आध्यात्मिक जपानुष्ठान

राजराजेश्वरी नगर।

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक के अवसर पर अभातेममं द्वारा निर्देशित दीपावली पर्व पर भगवान महावीर की आराधना करते हुए आध्यात्मिक जपानुष्ठान शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी के नवकार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वीश्री जी ने कहा कि 'रुपिया नहीं पाई तो बनो, महावीर नहीं तो उनके अनुयायी तो बनो'। दीपावली के पूर्व तीन दिनों का महत्त्व बताया एवं कहा कि इस समय जप विशेष फलदायक होता है। साध्वी अर्हमप्रभा जी द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी अमितरेखा जी ने मंत्रों को साधने एवं सिद्धिदायक मंत्रों के बारे में जानकारी प्रदान की।

अध्यक्ष लता बाफना ने स्वागत करते हुए आह्वान किया कि अनुष्ठान दीपावली के दिन अवश्य करें। उपाध्यक्ष शोभा बोथरा, सहमंत्री वंदना भंसाली, नीतू बाफना का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया उपस्थित रही।

कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। आभार ज्ञापन चित्रा बाफना ने किया।

खुशियों की रंगोली दिव्यांग बच्चों की मुस्कान

भीलवाड़ा।

तेममं को सेठ मुरलीधर मानसिंह सुर निलयम अंध विद्यालय में दिव्यांग बच्चों द्वारा बनाई गई आकर्षक रंगोली प्रतियोगिता कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया। गत महीने स्नेहम प्रोजेक्ट के माध्यम से दिव्यांग बच्चों को जरूरतमंद सामग्री कम्प्यूटर आदि उपलब्ध कराए गए। तेममं ने दिव्यांग बच्चों द्वारा कलात्मक रूप से बनाई गई रंगोली का निरीक्षण किया।

महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने बच्चों के कला कौशल एवं रचनात्मकता की सराहना करते हुए विलक्षण दिव्य बच्चों के प्रति शुभ भविष्य की मंगलकामना की और कहा कि तेममं आगे भी सहयोग के लिए तत्पर रहेगा। प्रथम, द्वितीय आने वाली प्रतिभाओं को प्रायोजक अनीता-राजेश हिंगड़ द्वारा पुरस्कार दिया गया।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि रंगोली प्रतियोगिता का निर्णय अध्यक्ष मीना बाबेल, उपाध्यक्ष मैना कांठेड, मंडल सक्रिय सदस्या अनीता हिंगड़ द्वारा निकाला गया। शेष सभी दिव्यांग बच्चों को पेन सेट, चॉकलेट्स देकर उत्साहवर्धन किया गया।

इस अवसर पर मंडल की उपाध्यक्षा यशवंत सूतरिया, प्रचार-प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा, महिला मंडल पूर्व कोषाध्यक्ष रेखा हिंगड़, मूक बधिर एवं अंध विद्यालय स्कूल के इंचार्ज आदित्य सिंह एवं प्रिंसिपल क्लेरा सिस्टर की उपस्थिति रही। स्कूल प्रिंसिपल द्वारा तेममं का आभार ज्ञापित किया गया।

✦ सातों सुख सबको मिले, यह कठिन है। इसलिए सात में से ३/४/५ जितने भी सुख मिलें, उसी में संतुष्ट रहो।

– आचार्यश्री महाश्रमण

आत्म-साक्षात्कार का अनुपम उपक्रम है प्रेक्षाध्यान

बैंगलोर।

तेरापंथी सभा, बैंगलोर के तत्त्वावधान में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन जैन विश्व भारती, लाडनूं के अंतर्गत आयोजित किया गया। सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने स्वागत किया। मुनि अर्हत कुमार ने कहा कि ध्यान वह दूरबीन है जो भीतर में व्याप्त सूक्ष्म शक्तियों को देखकर उन्हें जागृत करती है। प्रेक्षाध्यान का अर्थ है–गहराई में उतरकर देखना। स्थूल चेतना के द्वारा सूक्ष्म चेतना को देखना।

जानना और देखना चेतना का लक्षण है। आवृत चेतना में जानने और देखने की क्षमता क्षीण हो जाती है। उस क्षमता को विकसित करने का सूत्र है–जानो और देखो। प्रेक्षा-ध्यान की साधना का पहला ध्येय है–चित्त को निर्मल बनाना। कषायों से मलिन चित्त में ज्ञान की धारा नहीं बह सकती। चित्त की निर्मलता होते ही ज्ञान प्रकट होता है, उसका अवरोध समाप्त हो जाता है। इसलिए हमारा पहला लक्ष्य है चित्त की निर्मलता।

युवा संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि जो करता है प्रेक्षाध्यान, उसे मिल जाती है शांति, आनंद की अमूल्य खान, वह बन जाता है महान, उसको हो जाता है आत्मा का भान, उसकी अध्यात्म से बढ़ती है शान, इसलिए निरंतर करें प्रेक्षाध्यान। बाल संत जयदीप कुमार ने शांति का संदेश दिया।

इस कार्यशाला में लगभग ७० प्रेक्षाध्यान साधकों ने भाग लिया। प्रशिक्षक डालमचंद सेठिया, उर्मिला सुराणा, पुष्पा गन्ना, रेणू कोठारी एवं पूजा गुगलिया ने ध्यान, प्रणायाम, कायोत्सर्ग, श्वासप्रेक्षा, महाप्राण ध्वनि आदि अनेक विषयों का प्रयोग कराया। समता स्वासप्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, अवचेतन मन और मंगल भावना आदि अनेक विषयों का प्रयोग एवं प्रशिक्षण प्रदान किया। इस कार्यशाला में बच्चों ने भी बड़े उत्साह से भाग लिया। कार्यशाला के समापन पर सभी संभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। संयोजक राजेंद्र बैद ने धन्यवाद दिया।

भगवान महावीर इस भारत भू पर दिव्य ज्योति बनकर आए

कांकरोली।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर का २०४९वाँ निर्वाण दिवस मनाया गया। इस दिन २४ घंटे का जप अनुष्ठान चला। इस आध्यात्मिक जप अनुष्ठान में श्रावक-श्राविका समाज ने उत्साह से भाग लिया।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल संगान के साथ किया। सामूहिक रूप से पार्श्वनाथ की मंगल स्तुति की गई। साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर इस भारत की पुण्य धरा पर एक महा ज्योति बनकर आए। राजा सिद्धार्थ कुल में रानी त्रिशला की पावन कुक्षी से एक दिव्य आत्मा का अवतरण हुआ। राज्य में धन-धान्य की अभिवृद्धि होने से उस तेजस्वी बालक का नाम वर्धमान दिया। वर्धमान करीब तीस वर्ष तक गृहवास में रहे। फिर आत्मकल्याण एवं आत्म-ज्योति को पाने के लिए संन्यास जीवन की ओर प्रस्थान किया।

भगवान महावीर के मुख्य तीन सिद्धांत हैं–अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह। साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से सुमधुर गीत प्रस्तुत कर पूरी परिषद को भाव-विभोर कर दिया। कुछ देर साध्वीश्री जी ने सामूहिक जप भी करवाया। मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

त्रिदिवसीय जाप अनुष्ठान का आयोजन

जालना।

शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी के सान्निध्य में जालना में तीन दिवसीय जप अनुष्ठान आयोजित किया गया। इस अनुष्ठान में जप के साथ तप का भी समावेश किया गया। इस अनुष्ठान में अनेक भाई-बहनों द्वारा त्रिदिवसीय तप के उपलक्ष्य में तेला एवं तीन दिवसीय एकासन भी किए गए। साध्वीश्री जी ने जप के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

योगक्षेम

अभातेयुप योगक्षेम योजना

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

वाव निवासी, सूरत प्रवासी भरतभाई भीखाभाई मेहता का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

भरत भाई व उनके पिताजी भीखाभाई ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगल भावना पत्रक भेंट किया गया।

सूरत।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी विनय कुमार पुगलिया के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू, विनीत सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

विनय व उनके पिताजी कमल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

कार्यालय का शुभारंभ

अहमदाबाद।

आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, अहमदाबाद के कार्यालय का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक डालिमचंद नौलखा, दिलीप भंसाली, अपूर्व मोदी ने मंत्रोच्चार के साथ संपादित करवाया। मंगलाचरण विजयराज सुराणा ने किया।

प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष गौतम बाफना, महामंत्री अरुण बैद सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य जन उपस्थित रहे।

परिषद द्वारा आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष-मंत्री एवं पदाधिकारी को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। व्यवस्था समिति के मंत्री अरुण बैद ने सभी का आभार ज्ञापन किया। मुनि कुलदीप कमार जी की आज्ञा से मुनि मुकुल कुमार जी ने मंगलपाठ सुनाया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

कविता-नवीन दुगड़ के सुपुत्र का नामकरण संस्कार संस्कारक सुनील बोथरा ने विधि विधानपूर्वक मंगलमय वातावरण में जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

जैन संस्कार विधि के संयोजक कुलदीप बैद, कार्यसमिति सदस्य मुदित बच्छावत सहित समाज के अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

हैदराबाद।

लाडनूं निवासी, हैदराबाद प्रवासी शालीन-अपेक्षा बाफना की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित लुणिया ने संपन्न करवाया।

तेयुप परिवार की तरफ से अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी सरोज देवी महावीर नाहटा के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक रतनलाल छलाणी, पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। तेयुप सहमंत्री ऋषभ लालाणी सहयोग के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही। जैन संस्कार देवेंद्र डागा ने नाहटा परिवार को बधाई प्रेषित की।

✦ *अज्ञानी आदमी जाने-अनजाने समस्याओं को उत्पन्न करने वाला बन सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी रतनश्री जी के प्रति

अप्रमत्तता की ज्योति - शासनश्री साध्वी रतनश्री जी 'लाडनूं'

❑ साध्वी मुक्तियशा ❑

संसार के दो पड़ाव हैं—जन्म और मृत्यु। क्षणभंगुर इस जीवन को संयम से अभिस्नात कर आत्मा की उन्नति के लक्ष्य के साथ जो चरण अंतिम क्षण तक यात्रा करते हैं। वे मृत्यु को सार्थक बना लेते हैं। रात्रि ६:२५ पर शाहीबाग के जुली बंगलो में एक सन्नाटा छा गया। एक सार्थक एवं सफल यात्रा संपन्न करने वाली शासनश्री साध्वी रतनश्री जी (लाडनूं) संसार की नश्वरता का बोध कराकर हम सभी के भीतर अप्रमत्तता का दीप जलाकर चली गई।

आपका जन्म तेरापंथ की राजधानी लाडनूं की पावन धरा पर वि०सं० १९९० फाल्गुन शुक्ला पंचमी को सुप्रसिद्ध बोकड़िया परिवार में हुआ। १७ वर्ष की अवस्था में पंजाब के प्रमुख क्षेत्र संगरूर में गुरुदेव श्री तुलसी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण कर वि०सं० २००७ को मुमुक्षु रतनी साध्वी रतनश्री बन गई।

दीक्षा लेने के पश्चात आपको दो वर्ष तक गुरुकुलवास में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुकुलवास के पश्चात शासन गौरव साध्वी कस्तूरांजी के साथ आपको २५ वर्ष तक रहने का योग मिला जो आपकी संसारपक्षीय माता की बहन थीं। साध्वी कस्तूरांजी के कठोर अनुशासन में रहकर आपने प्राकृत, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी भाषा का गहन अध्ययन किया। गुरुदेव तुलसी ने उसी संगरूर की पावन धरा पर वि०सं० २०३६ में आपको अग्रगामी बनाया। अग्रगामी बनकर आपने दूसरी बार दक्षिण भारत की यात्रा की तथा सेवाकेंद्र में तीन चाकरी करके अपने ऋण से उऋण हुए।

मैंने देखा आपके भीतर अनेक विशेषताएँ थीं कुछ विशेषताओं का जिक्र करना चाहूँगी। जिसने मुझे बहुत ज्यादा प्रेरित किया।

स्वाध्याय प्रियता : ज्ञान के अनमोल खजाने को प्राप्त करने का सीधा सुगम तथा शक्तिशाली साधन है—स्वाध्याय। मैंने देखा आपका अप्रमत्त जीवन हर समय स्वाध्याय में लगा रहता। आगम एवं चौबीसी, आराधना का स्वाध्याय आपको बहुत प्रिय था। स्वास्थ्य की अनुकूलता होती तो लगभग पाँच-सात घंटे स्वाध्याय व जाप में ही व्यतीत होता। आपका कहना था—स्वाध्याय से मेरे मन में प्रसन्नता रहती है तथा विचारों की निर्मलता बढ़ती है।

गंभीरता : जीवन तो हर व्यक्ति जीता है, लेकिन जागरुकता एवं गंभीरता के साथ आपने जीवन जीया। प्रत्येक कार्य, प्रत्येक बात को गहराई से सुनते। कोई बात ऐसी होती कि किसी को बताना नहीं है, कहना नहीं है, मजाल है वो बात आपके मुख से निकलवा लें। किस बात को किस व्यक्ति के सामने प्रस्तुत करना है वह अद्भुत कला थी साध्वीश्री जी के पास।

सेवाभावना : तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने वाले प्रत्येक सदस्य को आज्ञा, मर्यादा एवं सेवा के संस्कार जन्मघुट्टी में प्राप्त होते हैं। आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में सेवा धर्म महान है, सेवा करने से कोई छोटा नहीं होता, सेवा एक ऐसा चामत्कारिक शब्द है जिसमें सबको अपनत्व में बाँधने की क्षमता है। आपका कहना था सेवा मन से होनी चाहिए, प्रसन्नता से होनी चाहिए, ताकि रोगी की आधी बीमारी ठीक हो जाए। सेवा का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कर पाँच दिनों में तीनों साध्वियों को स्वस्थ कर दिया।

वाक्सिद्धि : साध्वी रतनश्री जी की वचन सिद्धि भी बेजोड़ थी, उनकी मांगलिक का इतना प्रभाव था कि कोई व्यक्ति चाहे डॉक्टर हो, सी०ए० कर रहा हो, तपस्या कर रहा हो, विजनेश कर रहा हो, मुहूर्त हो। तेयुप, तेरापंथ सभा, महिला मंडल कोई भी हो, मांगलिक सुने बिना कोई कार्य नहीं करते, वो कहते आपने मंगलीक सुना दी अब वह कार्य अवश्य ही सफल होगा।

विशेष—दीक्षा : साध्वी रतनश्री जी द्वारा बहन लक्ष्मी कुमारी की दीक्षा और अनशन—अंतरात्मा के जागरण का संबंध भाव जगत से होता है, कब जागृति का सूर्य उदय हो, कहा नहीं जा सकता। बाव निवासी अहमदाबाद प्रवासी लक्ष्मी बहन संघवी, धर्मपत्नी छोटूभाई संघवी को गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की नौवीं पुण्यतिथि पर चौविहार उपवास के दिन भिक्षुस्वामी, तुलसीगणी, स्वयं के कुलदेवता खेतरपाल जी का संकेत मिला, अब आत्मा को देख एवं अपना उद्धार कर। बहन ने उसी समय अपने मन की भावना प्रेक्षा विश्व भारती में विराजित साध्वी रतनश्री जी आदि साध्वियों के समक्ष रखी। साध्वीश्री जी ने कहा—लक्ष्मी बहन संथारा करना कोई सरल कार्य नहीं है, बड़ा कठिन काम है। बहन वीरांगना की तरह बोल पड़ी, मैंने तो गुरु की साक्षी से तिविहार संथारा पचख लिया। अब आप गुरु आज्ञा से विधिवत् पचखा दो। बहन की प्रबल भावना को देखते हुए गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए साध्वीश्री जी ने ८ दिन तिविहार एवं १८वें दिन चौविहार में अनशन पचखाया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की आज्ञा से अहमदाबाद के शाहीबाग में समणी स्थितप्रज्ञा जी आदि चार समणियों की साक्षी से, साध्वी रतनश्री जी (लाडनूं) ने बहन लक्ष्मी को साध्वी लक्ष्मी कुमारी बना दिया। यह एक इतिहास की विरल घटना थी।

जीवन के नौवें दशक में साध्वीश्री जी को आचार्यश्री महाश्रमण जी की आज्ञा से शासनश्री साध्वी रमावती जी ने रात्रि ८ बजकर पाँच मिनट पर तिविहार तथा ६:१५ पर चौविहार अनशन कराके, देखते-देखते ६:२५ पर हमेशा के लिए अलविदा हो गई। शाहीबाग तेरापंथ भवन में विराजित मुनि कुलदीप कुमार जी स्वामी तथा मुनि मुकुल कुमार जी स्वामी का हर मिनट-मिनट में समाचार प्राप्त हो रहे थे। साध्वीश्री जी की स्थिति कैसी है। जागरूकता रखना। संथारे बिना मत जाने देना। मुनिद्वय का अत्यंत आदर का भाव था साध्वीश्री के प्रति। जो अंतिम समय तक रहा।

हम नतमस्तक हैं अप्रमत्तता की ज्योति के प्रति, एक ही भावना आपकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती हुई शीघ्र ही मोक्षश्री का वरण करें।

ज्ञानशाला सारना-वारणा निरीक्षण कार्यक्रम का आयोजन

गोरेगाँव (मुंबई)।

गोरेगाँव (मुंबई) ज्ञानशाला (वेस्ट) एवं संतोष नगर ज्ञानशाला का सारणा-वारणा निरीक्षण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। मंगलाचरण ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा किया गया। सबसे पहले आंचलिक सह-संयोजिका राजश्री कच्छारा ने बच्चों को आध्यात्मिक खेल खिलाएँ। आंचलिक संयोजिका अनीता परमार ने बच्चों को कंठस्थ ज्ञान के बारे में जानकारी दी। अंजु चौधरी ने प्रशिक्षकों को प्रश्न पूछे और उच्चारण शुद्धि करवाई।

इस अवसर पर स्थानीय सभा अध्यक्ष चतरलाल सिंघवी, तेयुप अध्यक्ष रमेश सिंघवी, परामर्शक चतरदेवी सिंघवी आदि ने ज्ञानशाला के प्रशिक्षिका बहनों को साधुवाद दिया एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए आध्यात्मिक शुभकामनाएँ प्रेषित की।

संचालन जॉन सह-संयोजिका भावना सांखला ने किया। स्वागत भाषण जॉन संयोजिका नीलम कोठारी ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका मनीषा मुणोत ने किया।

प्रशिक्षिका अंजु चंडालिया, अल्का आच्छा, रेखा सिंघवी और संतोष नगर की सभी प्रशिक्षिकाओं का सहयोग रहा। महिला मंडल संयोजिका कांता सिसोदिया एवं सह-संयोजिका ममता चिप्पड़ आदि बहनों, पूरे समाज से पदाधिकारियों एवं अभिभावकों आदि की उपस्थिति रही।

वृहद तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

साहूकारपेट।

'वृहत तप अभिनंदन' समारोह का आयोजन साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में किया गया। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि तपस्या आत्मशोधक तत्त्व है। जैसे कपड़ा मैला होने पर धोकर साफ कर लिया जाता है। वैसे ही आत्मा पर चढ़े कर्मरूपी मल का नाश होता है तप से। अतः तपस्या सोल-क्लीनर है। यह तन, मन, चेतना की शुद्धिकरण की प्रक्रिया जैन शासन की अद्वितीय और अभूतपूर्व देन है। बारी के उपवास, मासखमण, तप के सैकड़ों थोकड़े, पचरंगी, दस प्रत्याख्यान, आयंबिल, एकासन, नीवी की विशिष्ट सामूहिक आराधन, धर्मचक्र तप, ६१ वर्षीतप तथा एकांत तप आदि कई तपस्याओं का आराधन चातुर्मासिक भव्य सफलता की परिचायिका है।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा बेदमूथा के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीतिका प्रस्तुत की। तेरापंथी सभा के मंत्री अशोक खतंग ने आभार ज्ञापन किया। देवीलाल हिरण ने संचालन किया। अनेक तपस्वियों को अभिनंदन पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के प्रति

सहज सरल व्यवहार

● मुनि मुकुल कुमार ●

पचखा संथारा, मन मजबूती धार,
करने नैया पार।

श्री तुलसी की करुणा बरसी,
जीवन की फुलवारी सरसी।
बनी प्रवर अणगार।।

गुण रत्नों की पहनी माला,
वाणी ज्यों अमृत का प्याला।
रही सदा इकसार।।

चेहरे पर था ओज टपकता,
बच्चों की सी थी निश्छलता।
सहज सरल व्यवहार।।

शुभ अनशन को ग्रहण किया है,
सार्थक पंडित मरण किया है।
मुख-मुख जय-जयकार।।

सहगामी सतियाँ सुखकारी,
सेवाभावी साताकारी।
विनय रूप साकार।।

लय : तोता उड़ जाना---

जाएँ हम बलिहारी

● साध्वी मंगलप्रभा ●

जाएँ हम बलिहारी।
गजब तुम्हारी समता देखी, जो सबसे थी न्यारी।।

बोकड़िया कुल में जन्म लिया, रत्न दिया था नाम,
माँ सीरू की संतानों में, श्रेष्ठ किया था काम।
धन्य बना परिकर पा तुमको, लगती थी मनहारी।।

गुरु तुलसी रो संयम पाकर, धन्य बना था जीवन,
शासन गौरव कस्तूरांजी की, मिली सन्निधि पावन।
प्रतिभा कौशल से खिल पाई, जीवन की फुलवारी।।

दूर-दूर प्रांतों की तुमने, यात्रा की सुखकारी,
धर्मसंघ की ख्यात बढ़ाने, मेहनत की थी भारी।
ध्यान साधना लगती अच्छी, खिलती मन की क्यारी।।

अंत समय में अनशन करके, मन मजबूती धारी,
गौरव मुझको होता, पाई तुम जैसी मौसी प्यारी।
महाश्रमण शासन में तुमने, जीवन नैय्या तारी।।

लय : संयममय जीवन---

✦ *जिस व्यक्ति की चेतना आत्मदर्शन की ओर अग्रसर हो जाती है, उसके परदोषदर्शन के संस्कार स्वतः छूट जाते हैं।*

— आचार्यश्री महाश्रमण

सम्मान समारोह का आयोजन

कांकरोली।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में राजसमंद महावीर मंच की ओर से 'सम्मान समारोह' आयोजित हुआ, जिसमें समाज के ८० वर्ष से ऊपर भाई-बहनों का शिक्षा में ८० प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं एवं डिग्री प्राप्त यानी सी०ए०, एम०बी०ए०, पी०एचडी०, सी०एस० आदि की डिग्री प्राप्त करने वालों का तथा समाज में फैल रही फिजूलखर्ची, शादियों में प्रदर्शन, जैन समाज के प्रतिकूल प्रवृत्तियाँ आदि-आदि विषय पर भी चर्चा-परिचर्चा भी चली।

इस कार्यक्रम के मुख्य रूप से अतिथि तीनों समाज के वरिष्ठ व्यक्ति—मूर्तिपूजक मंच से अध्यक्ष नरेंद्र जैन, ज्ञानगच्छ संघ के अध्यक्ष, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी, डॉ० नीना कावड़िया, केलवा से बाबूलाल कोठारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया। महावीर मंच संस्था के सदस्य युवा साथी दीपक सोनी, ललित बाफना, विनोद बोहरा ने भगवान महावीर के प्रति गीत प्रस्तुत किया। महावीर मंच संस्थान के अध्यक्ष सुशील बड़ोला ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। साध्वीश्री जी ने सम्मान प्राप्त करने वाले तीनों श्रेणियों के भाई-बहनों के व्यक्तित्व की सराहना की। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग शिक्षा का युग है वैज्ञानिक युग में शिक्षा के भी कई आयाम चल रहे हैं और हर वर्ष सैकड़ों विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त कर सम्मानित हो रहे हैं, किंतु मेरा मानना है कि जीवन को संतुलित, आनंदित करने के लिए विनम्रता, शालीनता, धैर्यता, अनुशासनबद्धता, समर्पण आदि सद्‌गुणों का होना अति आवश्यक है। साध्वीवृंद ने गीत प्रस्तुत किया। अंत में सभी ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ० नीना कावड़िया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी आदि कइयों ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी अतिथियों का महावीर मंच की ओर से पचरंगी पट्टी आदि द्वारा सम्मान किया और चातुर्मास काल में आठ से ऊपर तपस्या करने वालों का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन दीपक सोनी ने किया।

भक्तामर एवं बीजाक्षर कार्यशाला

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में डॉ० अर्चना विनय जैन की प्रस्तुति में तेरापंथ सभा द्वारा 'भक्तामर बीजाक्षर कार्यशाला' आयोजित हुई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि भक्तामर स्तोत्र प्रभु ऋषभ की निष्काम भक्ति का एक अनुपम उदाहरण है। आचार्य मानतुंग ने श्रद्धा और भक्ति के सागर में निम्मजन करते हुए भगवान आदिनाथ के गुणों की जो स्तुति की है वो अनूठी है। भक्तामर स्तोत्र मंत्रों का खजाना है।

डॉ० अर्चना, विनय जैन ने कहा कि गुरुदेव मानतुंग ने भगवान ऋषभ की भावपूर्ण स्तुति की। उनका उद्देश्य संकट निवारण नहीं अपितु भगवान के प्रति भक्ति करनी थी। डॉ० अर्चना विनय जैन ने भक्तांमर स्तोत्र के अड़तालीस श्लोक के बीजमंत्र, सिद्धिमंत्र का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक प्रभाव को प्रोजेक्टर के माध्यम से बताया। ध्यान के विभिन्न प्रयोग के माध्यम से आनंदमय जीवन जीने का तरीका बताया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष युवराज जैन, तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, तेमम अध्यक्ष बॉबी ने मोमेंटो प्रदान कर डॉ० अर्चना का सम्मान किया। कार्यक्रम में केसिंगा, बोरड़ा, कुरसुड, चांदोतारा, सिंधिकेला, बगुमुंडा, बेलपाड़ा, रामपुर, पटनागढ़, बारडोली, विजयनगरम्, कटक, अंबिकापुर, दिल्ली, बोबली क्षेत्र के लिए सहभागी बने।

महाश्रमण अष्टकम प्रतियोगिता का आयोजन

भीलवाड़ा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी की प्रेरणा से भीलवाड़ा श्रावक समाज ने तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमण जी की स्तुति में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा रचित महाश्रमण अष्टकम कंठस्थ किया।

तेमम द्वारा महाश्रमण अष्टकम कंठस्थ प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी के श्रम से श्रावक-श्राविकाओं ने इस अष्टकम को लयबद्ध रूप से कंठस्थ किया।

इस अष्टकम में दीक्षित कोठारी, जेनिल कोठारी, गर्वित बड़ोला, वंशिका बड़ोला, मोहित ओस्तवाल इन छोटे-छोटे बच्चों ने एवं महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल, मैना कांठेड़, विमला रांका, नीलम लोढ़ा, स्नेहलता झाबक, शोभना सिरोहिया, रतन देवी कोठारी, रीना बाफना सहित अनेक प्रतिभागियों ने अष्टकम की अच्छी प्रस्तुति दी।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि महाश्रमण अष्टकम प्रतियोगिता के प्रायोजक कमला देवी नवरतन मल, स्नेहलता, लक्ष्मीलाल, प्रेक्षा, प्रतीक झाबक का तेमम द्वारा सम्मान एवं आभार व्यक्त किया गया।

हमारी पहचान - हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार विषयक कार्यशाला

माधावरम्, चेन्नई।

संपूर्ण विश्व में एकमात्र भारतवर्ष को ही विश्व गुरु कहा गया है। संसार के अनेकों विकसित देशों के पास भोग-उपभोग के साधनों की बहुलता होते हुए भी भारत को ही भारतमाता से संबोधित किया जाता है। उक्त विचार तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट, चेन्नई की आयोजना में 'हमारी पहचान-हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार' विषयक कार्यशाला में मुनि सुधाकर कुमार जी ने व्यक्त किए।

मुनिश्री ने कहा कि भारत में विकास से ज्यादा चरित्र पर, संपत्ति से ज्यादा संस्कृति पर बल दिया जाता है। सत् संस्कृति से ही संस्कार बलवान बनते हैं। मुनिश्री ने अनेकों जीवनोपयोगी टिप्स बताए।

मुनि नरेश कुमार जी ने विषयानुरुप विचार व्यक्त किए। उपासक धनराज मालू ने गीत का संगान किया।

भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस

जीन्द।

साध्वी संयमप्रभा जी के सान्निध्य में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस तेरापंथ सभा भवन, जीन्द में मनाया गया। साध्वी संयमप्रभा जी ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी अहिंसा व शांति के अवतार थे। उन्होंने दास प्रथा, रूढ़िवादिता तथा आडंबर युक्त धर्म का विरोध किया। भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा, अनेकांतवाद आदि के माध्यम से जीने की कला का संदेश दिया।

साध्वी शशिकला जी ने भगवान महावीर स्वामी के अंतिम समय की घटना को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के सहमंत्री कुणाल मित्तल, सतीश जैन, ईश्वर जैन, मास्टर राजकिशन जैन, तेमम अध्यक्ष, उपासिका कांता मित्तल, चमेली जैन, ओमपति गोयल, निर्मला जैन आदि उपस्थित रहे।

मंगल मिलन समारोह का आयोजन

संगरूर।

सुनाम चातुर्मास संपन्न कर उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी व धूरी चातुर्मास संपन्न कर पधारे मुनि देवेंद्र कुमार जी का संगरूर धरा पर मंगल मिलन हुआ।

मुनि कमल कुमार जी स्वामी ने मिलन के अवसर पर विशेष हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मुनि देवेंद्र कुमार जी सेवाभावी, मिलनसार और उदार वृत्ति वाले हैं। इन्होंने पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी से अर्ज करके हमारे साथ सुजानगढ़ से टमकोर तक रहे इन्होंने जिस उत्साह और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया। एक इतिहास बन गया। दोनों ही संतों ने बड़ी ही तन्मयता से हर तरह की सेवा की। उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

मुनि देवेंद्र कुमार जी ने मुनि कमल कुमार जी की अनेक विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि मेरा गृहस्थ अवस्था से ही मुनिश्री के प्रति श्रद्धा भाव जुड़ा हुआ है। नोखा मर्यादा महोत्सव की तैयारी के समय जब मुनिश्री का पदार्पण हुआ, उस समय मुनि वत्सराज जी स्वामी को बहुत प्रसननता हुई और मिल-जुलकर कार्य किया, जिससे मर्यादा महोत्सव हर तरह से सफल हुआ। पंजाब, हरियाणा में गाँव-गाँव में गुरु धारणा करवाकर जो प्रभावना की है वह हम सभी के लिए प्रेरणा है।

इस असर पर मुनि आर्जन कुमार जी, मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी ने भी अपने श्रद्धासिक्त भावों के द्वारा मुनिद्वय की विशेषताओं का उल्लेख किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

श्रावक सम्मेलन का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में श्रावक सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसका विषय था—'संगठन को कैसे करें मजबूत' मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। स्वागत की कड़ी में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेयुप के अध्यक्ष श्रेयांश गोलछा, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली, अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने महासभा परिवार का स्वागत किया एवं संस्था की जानकारी दी।

महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने कहा कि तेरापंथ सभा, विजयनगर एक सक्रिय सभा-संस्था है जो सदैव गुरुइंगित गुरु आराधना पर कार्य करती है। दक्षिणांचलिक प्रभारी प्रकाशचंद लोढ़ा ने महासभा अध्यक्ष का संक्षिप्त परिचय दिया।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि संगठन को आगे बढ़ने के लिए व्यक्ति को धैर्य एवं चरित्र का पूर्ण रूप से पालन करना होगा। मुनि रश्मि कुमार जी ने गीतिका प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष मनोहर बोहरा, मंत्री मंगल गोचर, सहमंत्री लाभेष कांसवा, ज्ञानु नाहटा, कोषाध्यक्ष दिलीप चावत, महिला मंडल व तेयुप के पदाधिकारी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत ने किया।

भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक महोत्सव

बालोतरा।

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम अनुष्ठान कार्यक्रम आयोजित हुआ।

धनतेरस पर त्रिदिवसीय जप अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ। मुनि भव्य कुमार जी द्वारा विधिवत् रूप से तीर्थंकर प्रभु महावीर और गौतम स्वामी का मंगल स्मरण विविध मंत्रों के अनुष्ठान से किया। दीपावली की संध्या पर मुनि मोहजीत कुमार जी द्वारा विशेष वृहद मंगलपाठ हुआ।

भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक दिवस पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि दीपावली ज्योति का पर्व है। यह पर्व जीवन में प्रकाश फैलाने की प्रेरणा प्रदान करता है। कार्तिक अमावस्या की रात्रि में भगवान महावीर का पावापुरी में निर्वाण हुआ था। उन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा जन-जन में व्याप्त अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने का प्रयत्न किया। उनके सिद्धांतों का अनुसरण सही ढंग से किया जाए तो विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान सहज संभव है।

इस अवसर पर मुनि भव्य कुमार जी ने गीत का संगान किया। मुनि जयेश कुमार जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

✦ *भौतिक विकास के बिना नगर, प्रांत और राष्ट्र परिपूर्ण विकास वाला नहीं बन सकता।*
— आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

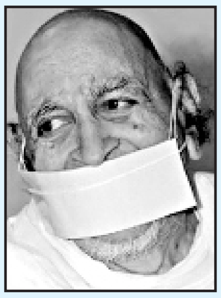

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

आचार्य तुलसी : जीवन परिचय

मौलिक अवदान

आचार्य तुलसी स्वप्नदर्शी आचार्य थे। खुली आँखों से सपने देखना, उन्हें सफल करने के लिए संकल्पित होना और पुरुषार्थ की प्रज्वलित लौ से मंजिल तक पहुँचना उनकी नियति थी। उन्होंने अपनी तेजस्वी और यशस्वी अनुशासना में मौलिक अवदानों की कतार खड़ी कर दी–

– प्रेक्षाध्यान : साधना की वैज्ञानिक पद्धति
– जीवन विज्ञान : सर्वांगीण विकास का उपक्रम
– समण श्रेणी : संन्यास की नई परंपरा
– जैन विश्व भारती : प्राच्यविद्याओं के अध्ययन एवं अनुसंधान का केंद्र
– जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी : जैन समाज का प्रथम विश्वविद्यालय
– पारमार्थिक शिक्षण संस्था : मुमुक्षु श्रेणी का प्रशिक्षण केंद्र

इस प्रकार के अनेक कालजयी अवदानों के प्रति प्रणत भारत सरकार तथा कुछ विशिष्ट संस्थानों ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, भारत ज्योति, वाक्पति आदि सम्मानों को समर्पित कर स्वयं को कृतकृत्य माना।

जिस समय उनका वर्चस्व शिखर पर था, उस समय (१९९४) उन्होंने छह दशकों के नवोन्मेषी नेतृत्व को त्यागकर, विसर्जन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर आचार्य महाप्रज्ञ को धर्मसंघ का नेतृत्व सौंप दिया। सत्ता से ऊपर उठने के बाद भी उनकी जीवन-यात्रा, ज्योति-यात्रा बनी रही। वे आजीवन जन-जन को अध्यात्म का आलोक बाँटते रहे और मानवता की सेवा करते रहे।

२३ जून, १९९७ को सहसा वह अध्यात्म का महासूर्य अपनी आलोक-रश्मियों को समेटकर युग-पटल से तिरोहित हो गया।

आचार्य तुलसी गति, प्रकाश और ऊर्जा के पर्याय थे। शुभ्र श्वेत वस्त्रों में झाँकता हुआ वह अद्भुत व्यक्तित्व, जिसकी आँखें बोलती थीं, वाणी देखती थी और मन सुनता था, वह आज भी जन-जन के मन-मंदिर में समाया हुआ है।

तुलसी जन्मशताब्दी का ऐतिहासिक प्रसंग उनकी दिव्य चेतना, क्रांतिकारी विचारों और अलौकिक सर्जनाओं से संपर्क स्थापित करने का एक दुर्लभ अवसर है।

हमने पढ़ा...

आत्मा के आसपास होने का मतलब है–आत्म-दर्शन की दिशा में प्रस्थान करना। इस यात्रा में अर्हत वाणी और अध्यात्म का पाथेय–दोनों हमारे पथदर्शक बनकर हर कदम रास्ता दिखाते हैं। जो साधक निश्चय और व्यवहार के साथ समत्वशील बनकर जीना सीख लेता है, उसका मन संसार में रहता हुआ भी संन्यस्त बन जाता है। वह इंद्रियों और मन को जीत लेता है। वह बाहर और भीतर से कर्मबंध के प्रति जागरूक रहता है। फिर उसे ध्यान के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता, ध्यान स्वयं ही लग जाता है।

प्रेक्षाध्यान अनुभव की वह भूमिका है, जहाँ संप्रदाय या परंपरा का भेद नहीं होता। इसलिए ध्यान को भी विभक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी उस भूमिका तक पहुँचने के लिए जो-जो साधन अपनाए जाते हैं, वे विभक्त हो जाते हैं। इस दृष्टि से प्रेक्षाध्यान पद्धति का सर्वोपरि लक्ष्य है–वीतरागता। राग और द्वेष को उपशांत करना या आंशिक रूप से क्षीण करना प्रेक्षा का आदि-बिंदु है। इसका अंतिम बिंदु है–राग और द्वेष का सर्वथा क्षय। ध्यान के आदि-बिंदु और अंतिम बिंदु के मध्य की सारी यात्रा राग-द्वेष के उपशमन या क्षय की यात्रा है। इस यात्रा में चित्त पर राग-द्वेष का प्रभाव जितना अधिक होगा, कषाय प्रबल रहेगा। कषाय की प्रबलता में चित्त की चंचलता समाप्त नहीं हो सकती। चंचल चित्त न तो ध्यान के लिए उपयुक्त होता है और न वह वीतरागता का दिशा में आगे बढ़ सकता है। इस दृष्टि से जैन परंपरा में ध्यान-पद्धति का उद्देश्य यही होना चाहिए। इस व्यापक उद्देश्य को लेकर फलित होने वाली ध्यान-पद्धति अपने आप में पूर्ण पद्धति है और वह हर व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

(समाप्त)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१०७)

देखती हूँ जब तुम्हारी हृदयस्पर्शी रील कोई।
उतर आती है नयन में आँसुओं की झील कोई।।

सफर लंबा पथ अजाना हमसफर का साथ छूटा
कौंधती नभ में बिजलियाँ सब्र का बंधान टूटा
कौन अब आकर जलाए तिमिर में कंदील कोई।।

खुल रहे थे जिंदगी में क्षितिज सपनों के सलोने
भरा था दामन खुशी से लगे तीनों लोक बौने
चुभ गई कैसे हृदय में अब नुकीली कील कोई।।

दृष्टि धुंधलाई अचानक सोच पर छाया कुहासा
धरा धड़की गिर पड़ा नभ हाथ में आई हताशा
काश! प्राणों की सुने अब व्यथापूर्ण अपील कोई।।

मिली छाया कल्पतरु की सो रही निश्चिंत होकर
हो रही बेजान-सी हा! आज निज सर्वस्व खोकर
रूठ जो किस्मत गई अब कर सके तब्दील कोई।।

नयन हैं प्यासे जहाँ के हर डगर तुमको निहारे
रुक गया ज्यों समय का रथ लग रहे फीके नजारे
की त्वरा इतनी नहीं तुम-सा यहाँ गतिशील कोई।।

(१०८)

तुलसी अपने युग की अनुपम अद्भुत एक कहानी है
तुलसी के चिंतन में देखी हमने एक रवानी है।
तुलसी का कर्तृत्व निहारा सबने अपनी आँखों से
अनुभव को दे सकें शब्द तो वह ताकत रूहानी है।।

छोड़ गया अनुगूँज गगन में ऐसा गीत सुनाया था
नए बोध के क्षितिजों को उसने उन्मुक्त बनाया था
सपनों की बारात सजाई सदा सलोनी पलकों में
कदम-कदम चुक गए मनोबल को मजबूत बनाया था।।

बाँध सफलता दामन में धरती पर आए श्री तुलसी
घोर विरोधों संघर्षों में मुसकाए थे श्री तुलसी
लहरों का आमंत्रण पाकर सागर तरने की ठानी
बालक युवा वृद्ध सबके मानस पर छाए श्री तुलसी।।

पीछे आने वालों का पथ तुमने सदा बुहारा है
शूलों को चुन फूल खिलाए उपकृत यह जग सारा है
टूटे पंख परिंदों के जब दी तब उड़ने की ताकत
भटके कदमों को अरण्य में उससे मिला उजारा है।।

(क्रमशः)

✦ तुम दूसरों से आशीर्वाद माँगते हो। जरा यह भी सोचो, तुम्हें स्वयं का आशीर्वाद मिल रहा है या नहीं? तुम्हारा पवित्र विचार और पवित्र आचार तुम्हारा अपना आशीर्वाद है।

✦ अच्छाइयों के प्रति प्रेम पैदा कर लो। फिर उनका आचरण आसान हो जाएगा। बुराइयों से घृणा कर लो। फिर उन्हें छोड़ना आसान हो जाएगा।

✦ मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र को कठिन स्थिति में छोड़े नहीं। उसे आत्मीयता व सहयोग प्रदान करे। कठिनाई में छोड़ने वाला झूठा व न छोड़ने वाला सच्चा मित्र है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

संबोधि

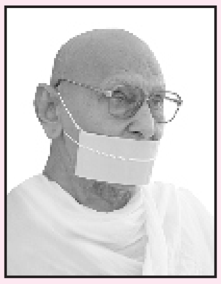

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(५३) यदा लोकमलोकं च, जिनो जानाति केवली।
आयुषोऽन्ते निरुन्धानः, योगान् कृत्वा रजः क्षयम्।।

(५४) अनन्तामचलां पुण्यां, सिद्धिं गच्छति नीरजाः।
तदा लोकमस्तकस्थः, सिद्धो भवति शाश्वतः।। (युग्मम्)

(पिछला शेष) जीव और अजीव के बोध से ही जीवों की विविध गतियों का बोध होता है। कौन जीव कहाँ जाता है? कैसे जाता है? क्यों जाता है? तिर्यंच गति, मनुष्य गति, नरक गति और देव गति के निमित्त क्या-क्या बनते हैं? इसके बोध से पुण्य और पाप का ज्ञान होता है। पुण्य शुभ कर्म है और पाप अशुभ कर्म। पुण्य व्यक्ति को उत्कर्ष के पथ पर ले जाता है और पाप अपकर्ष के पथ पर। पुण्य की महिमा से मंडित व्यक्ति पूज्य, आदेय, श्लाघ्य, कीर्तिमान बनता है और पापोदय के कारण हीन, अश्लाघ्य आदि। ऐसे अनेक अभिनयों के पीछे पुण्य-पाप की छाया है। पुण्य और पाप के साथ उसके बंधन और मुक्ति की क्रिया भी जुड़ी है। जब संसार की विचित्रता सामने आती है तब मन सहज ही सांसारिक विषय-भोगों से उद्विग्न हो जाता है, भोगों से विरक्ति हो जाती है। भोग सिर्फ रोग ही नहीं देते हैं अपितु दुःख भी देते हैं। मन की विरक्त दशा में सभी प्रकार के मानवीय, दैवीय भोग क्षुद्रतम प्रतीत होने लगते हैं। बारह से वितृष्ण मन अंतरंग सुख में निमग्न होने लगता है। सांसारिक संबंध भी मिथ्या दिखाई देने लगते हैं। मन संयोगों से मुक्त होने के लिए तरसने लगता है। जब तक संयोगों के प्रति चित्त आकृष्ट रहता है तब तक परमतत्त्व से भी प्रीति नहीं होती। बाहर का राग भीतर से विराग पैदा करता है और भीतर का राग बाहर से विराग पैदा करता है।

संसार संयोगों की देन है। संयोग कर्म हेतुक हैं। कर्म से पुनः कर्म का ही अनुबंध होता है। कर्म आंतरिक संयोग है। आंतरिक संयोगों के बने रहने पर बाह्य संयोगों के त्याग का वास्तविक अर्थ नहीं रहता। वस्तुतः आंतरिक संयोगों को ही त्यागना है। अन्यथा त्याग कर भी कुछ नहीं त्यागा जाता है। मन ममत्व की परिक्रमा करता ही रहता है। इसे सम्यक् समझकर ही साधक बाह्य और आभ्यंतरिक दोनों संयोगों से मुक्त होने के लिए तत्पर होता है। यह संयोग-मुक्ति का संकल्प उसे मुनिपद पर आरूढ़ करता है। वह सबको संन्यास दे देता है। सही माने में अनगारता राग, द्वेष, काम, क्रोध, मोह आदि वृत्तियों व बाह्य रूप से सांसारिक वृत्तियों के परित्याग से ही सिद्ध होती है। संन्यस्त व्यक्ति—मुनि ही संवर धर्म का स्पर्श करता है।

संवर विजातीय तत्त्व का अवरोधक है। आत्मा के असंख्य द्वार खुले हैं, जिनसे सतत कर्म तत्त्व का प्रवाह गतिमान रहता है। कर्म पौद्गलिक—विजातीय हैं। जब तक इसके द्वार को रोका—बंद नहीं किया जाता है तब तक आत्मा का भव-भ्रमण चलता रहता है। जब साधक आत्मा के साथ एकत्व स्थापित करने लगता है, एकत्व घनीभूत होने लगता है तब उत्कृष्ट संवर की आराधना प्रारंभ हो जाती है। खुले हुए द्वार सहज ही अवरुद्ध होने लगते हैं, फलतः अबोधि-अज्ञान द्वारा अर्जित अनंत जन्मों के कलुषित कर्म प्रकंपित होने लगते हैं। पंछी जैसे अपने शरीर पर लगे रजकणों को पंखों को फड़फड़ाकर झटका देता है, वैसे ही साधना के द्वारा साधक के कर्म रज प्रकंपित होकर आत्मा से विलग हो जाते हैं। कर्मों का अलगाव ही आत्मा के सौंदर्य को प्रकट कर देता है। अनंत जन्मों का तम प्रकाश की एक किरण से विलीन हो जाता है। कर्म के क्षीण होते ही ज्ञान-दर्शन जो आत्मा का स्वभाव है वह व्यक्त हो जाता है। यह ज्ञान शास्त्रीय—बौद्धिक ज्ञान से भिन्न है। इसमें किसी माध्यम की अपेक्षा नहीं रहती है, न इसमें निकटता या दूरी का व्यवधान रहता है। यह ज्ञान अमर्यादित-असीम होता है, विश्व-लोक के इस छोर और उस छोर की परिधि भी वहाँ नहीं रहती। वस्तु के अनंत धर्मों का अवलोकन अविलंब हो जाता है। इसे केवलज्ञान कहते हैं। यही कैवल्य अवस्था है। ज्ञान और दर्शन—ये दो शब्द सिर्फ वस्तु के बोध की अवस्था मात्र है। दर्शन में वस्तु का सामान्य बोध होता है और ज्ञान में वस्तु का अनंत धर्मों-पहलुओं का ज्ञान होता है। एक सामान्य जानकारी देता है और एक विशिष्ट। इस ज्ञान के अधिकारी व्यक्ति को जिन—केवली कहते हैं। लोक व अलोक के दर्शन में केवली ही सक्षम होते हैं।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न २० : ब्रह्मचारी मर कर कहाँ जाता है?

उत्तर : जो व्यक्ति धर्म की विविध प्रवृत्तियों का आचरण नहीं करता, केवल ब्रह्मचर्य का पालन करता है। उसके लिए भी कहा गया है कि वह देव ही बनता है।

प्रश्न २१ : कोई व्यक्ति परिस्थितिवश या अनिच्छापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करता है। क्या ऐसे व्यक्ति को भी कुछ लाभ होता है?

उत्तर : परिस्थितिवश या अनिच्छापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों के भी अकाम निर्जरा होती है और उनके भी १४,००० वर्ष स्थिति वाले देव होने का उल्लेख है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

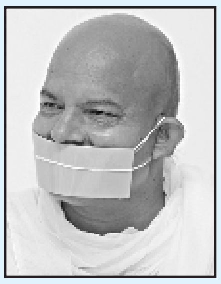

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य जीतमलजी

तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जीतमलजी जैन परंपरा में एक महान् प्रतिभाशाली आचार्य हुए हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में अपना उपनाम 'जय' रखा। इसलिए वे जयाचार्य के नाम से ही अधिक विख्यात हैं। उनका जन्म मारवाड़ के रोयट ग्राम में वि०सं० १८६० आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को हुआ। उनके पिता का नाम आईदानजी तथा माता का नाम कल्लूजी था। वे ओसवाल जाति के गोलछा गोत्र के थे। जयाचार्य जब सात वर्ष के थे, तभी उन्होंने दीक्षित होने का निश्चय कर लिया।

जयाचार्य की दीक्षा आचार्य भारमलजी के आदेश से युवाचार्य रायचंदजी द्वारा जयपुर में संपन्न हुई। दीक्षा दिन वि०सं० १८६९ माघ कृष्णा सप्तमी है। इस समय जयाचार्य दसवें वर्ष में प्रवेश कर चुके थे।

जयाचार्य के ज्येष्ठ भ्राता स्वरूपचंदजी स्वामी की दीक्षा इसी वर्ष पौष शुक्ला नवमी को जयपुर में हुई थीं। जयाचार्य की दीक्षा के लगभग एक महीने बाद फाल्गुन कृष्णा एकादशी को उनकी माता कल्लूजी तथा द्वितीय ज्येष्ठ भ्राता भीमराजजी ने भी दीक्षा अंगीकार की। उनकी संसारपक्षीय बुआ अजबूजी पहले से ही दीक्षित थीं। इस प्रकार जयाचार्य का पूरा परिवार ही तेरापंथ धर्मसंघ को समर्पित हो गया।

दीक्षित होने के बाद शिक्षा के लिए जयाचार्य मुनि हेमराजजी को सौंपे गए। भारमलजी स्वामी जैसे समर्थ आचार्य, ऋषिराय जैसे दीक्षा गुरु और आगमविज्ञ हेमराजजी स्वामी जैसे विद्या गुरु पाकर मानो वे त्रिवेणी में स्नात हो गए।

जयाचार्य प्रारंभ से ही स्थिरयोगी एवं महान् मेधावी थे। चौदह वर्ष की बालवय में उनकी स्थितप्रज्ञता को देखकर एक अन्य मतावलंबी विरोधी भाई के मुख से निकल पड़ा—'जिस संघ में ऐसे निष्ठावान स्थिरयोगी मुनि विद्यमान हैं, उस संघ की नींव को कम से कम सौ वर्ष तक तो कोई हिला नहीं सकता।'

जयाचार्य की विकासशील क्षमताओं को देखकर ऋषिराय ने वि०सं० १८९४ में उन्हें युवाचार्य पद पर नियुक्त किया। ऋषिराय के स्वर्गवास के पश्चात् वि०सं० १९०८ माघ शुक्ला पूर्णिमा को उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ का दायित्व संभाला।

जयाचार्य के शासनकाल में तेरापंथ धर्मसंघ एक शताब्दी को पार कर दूसरी शताब्दी में चरणन्यास कर रहा था। वह युग विचारों के संक्रमण का युग था। तेरापंथ की आंतरिक व्यवस्थाएँ परिवर्तन माँग रही थीं। जयाचार्य ने धर्मसंघ में अनेक व्यवस्थाओं को जन्म दिया। जयाचपार्य ने आज से एक शताब्दी पूर्व संघ में संविभाग की व्यवस्था स्थापित कर समाजवाद को मूर्त रूप दे दिया था। जयाचार्य ने न केवल संघीय पुस्तकों, धर्मोपकरणों एवं श्रम का ही संविभाग किया अपितु साधु-साध्वियों के वर्गों का भी समीकरण किया। उस समय तक साधु-साध्वियों के वर्गों में सहयोगियों की संख्या समान नहीं थी। जयाचार्य ने मनोवैज्ञानिक ढंग से सबके मानस को तैयार कर व्यवस्था को सुचारु रूप प्रदान किया। इस व्यवस्थागत परिवर्तन को आज की भाषा में जयाचार्य की क्रांति कहा जा सकता है। संघ को समृद्ध एवं सुसंगठित रखने के लिए उन्होंने नई मर्यादाओं का निर्माण भी किया।

श्रीमज्जयाचार्य कुशल अनुशासक, संविधान प्रणेता व मनोवैज्ञानिक अनुशास्ता होने के साथ-साथ महान् साहित्यसेवी थे। कवित्व उनमें नैसर्गिक था। ग्यारह वर्ष की उम्र में उन्होंने 'संतगुणमाला' कृति की रचना की। उन्नीस वर्ष की उम्र में पन्नवणा जैसे गंभीर ग्रंथ का राजस्थानी भाषा में पद्यानुवाद किया। इसके बाद तो जयाचार्य ने जैसे साहित्य की अजस्र धारा ही प्रवाहित कर दी। जैन वाङ्मय के पंचम अंग भगवती पर उनके द्वारा लिखा गया राजस्थानी पद्यानुवाद 'भगवती की जोड़' राजस्थानी साहित्य का सबसे बड़ा ग्रंथ माना जाता है। उन्होंने न केवल आगमग्रंथों पर पद्यबद्ध टीकाएँ लिखीं अपितु स्थान-स्थान पर अपनी स्वतंत्र अनुभूति के आधार पर समीक्षात्मक टिप्पणियाँ भी लिखीं हैं। जयाचार्य ने आख्यान, संस्मरण, स्तुति, दर्शन, न्याय, छंद, व्याकरण, ध्यानयोग आदि विविध विषयों में अपनी लेखनी चलाई। उनका समग्र साहित्य करीब तीन लाख पद्य परिमाण वाला है।

(क्रमशः)

✦ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं—मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।
—आचार्यश्री महाश्रमण

शिक्षा की समस्या का समाधान करता है जीवन-विज्ञान

दिवेर।

शिक्षा हो और समाधान ना हो तो वह शिक्षा अधूरी है। शिक्षा से समस्या का समाधान होना चाहिए। शिक्षा के चार आयाम हैं—शारीरिक विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक विकास और भावनात्मक विकास, सर्वांगीण विकास के लिए सर्वांगीण शिक्षा का होना जरूरी है। वर्तमान की समस्या का समाधान शिक्षा के माध्यम से हो सकता है। उक्त विचार मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने फूलीबाई भेरूलाल नाहर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, दिवेर में छात्राओं को संबोधित करते हुए कहे। उन्होंने कहा कि जीवन-विज्ञान से जहाँ एक ओर वर्तमान की समस्या का समाधान होता है, वहीं दूसरी ओर अध्यापक और विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है।

इस अवसर पर मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान एवं जीवन-विज्ञान के प्रयोग कराते हुए विद्यार्थियों को सुंदर लेखनी स्मृति विकास तनाव मुक्ति, क्रोध समन एवं संतुलित जीवन जीने के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम मुनि संजय कुमार जी एवं मुनि प्रकाश कुमार जी की प्रेरणा से आयोजित हुआ।

प्रारंभ में स्कूल की छात्राओं के द्वारा गीत का सामूहिक संगान किया गया। प्राचार्य गणेश राम बुनकर ने मुनिश्री का स्वागत किया। डालचंद सोलंकी ने मुनिप्रवर का परिचय दिया। तेरापंथ सभा के मंत्री बाबूलाल लोढ़ा, पवन पगारिया, ललित लोढ़ा एवं अनेक महिलाएँ उपस्थित थे। प्राचार्य को स्कूल के लिए प्रेक्षाध्यान और 'स्वास्थ्य पुस्तक' भेंट की गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नौवीं क्लास से लेकर १२वीं क्लास तक के छात्राओं ने भाग लेकर अणुव्रत के संकल्प स्वीकार किए। स्कूल की ओर से हरीश सालवी ने आभार ज्ञापन करते हुए पुनः आगमन हेतु निवेदन किया।

सामूहिक जीवन की प्रयोगशाला है परिवार

कटक, उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में 'परिवार सेमिनार' आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा 'प्रणीत परिवार के साथ केसे रहें' पुस्तक आधारित तेरापंथी सभा द्वारा शहीद भवन में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि उड़ीसा सरकार के कैबिनेट मंत्री राजेंद्र ढोलकिया, मुख्य वक्ता मुंबई-महाराष्ट्र कस्टम विभाग के कमिश्नर अशोक कोठारी, सम्माननीय अतिथि अंतर्राष्ट्रीय महासचिव (महावीर इंटरकोंटिनेटल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन), लोकेश कावड़िया व छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष अशोक जैन थे। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि समाज की सबसे छोटी किंतु महत्त्वपूर्ण इकाई है—परिवार। सात वार तो सभी जानते हैं पर आठवाँ वार है—परिवार। परिवार का अर्थ है—जहाँ सुख-दुःख बाँटकर भोगे जाते हैं, जहाँ रिश्तों की अच्छी तरह से परवरिश होती है। दूसरे शब्दों में निकटवर्ती-सहवर्ती व्यक्तियों के समूह का नाम परिवार है।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजेंद्र ढोलकिया ने समाज में पारिवारिक वातावरण बने, इसके लिए सेमिनार को उपयोगी बताते हुए इसके आयोजन के लिए तेरापंथ सभा को धन्यवाद दिया। मुख्य वक्ता अशोक कोठारी ने कहा कि परिवार का मुखिया अगर सदस्यों को जोड़ने वाला हो तो परिवार को बिखरने से बचाया जा सकता है। परिवार में उदारता-सहिष्णुता का प्रयोग उसे एकसूत्रता के धागे में पिरोए रखता है।

सम्माननीय अतिथि लोकेश कावड़िया ने कहा कि वह परिवार सुखी होता है जिसके सदस्यों में मेरा-तेरा का भाव नहीं होता। सम्माननीय अतिथि अशोक जैन ने कहा कि हमारी पहचान हमारे परिवार से होती है।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी ने दिया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री चैनरूप चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व चैनरूप चोरड़िया ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया। चारित्रात्माओं की चिकित्सा सेवा हेतु डॉ० कुश कुमार जाजोड़िया, डॉ० संदीप मित्तल का सम्मान किया गया। इस अवसर पर उड़ीसा प्रदेश अध्यक्ष उमेश खंडेलवाल का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं, अणुव्रत समिति आदि के कार्यकर्ताओं का योगदान रहा।

कायोत्सर्ग प्रयोग से मिलती है - स्वस्थता

साहूकारपेट।

दर्शन क्लब की सदस्याओं को कायोत्सर्ग प्रयोग करवाने से पूर्व साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा मानव जाति को समर्पित विशिष्ट अवदान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान पद्धति देकर मानव सेवा का महान कार्य किया है। लगभग ५० वर्षों से चल रही इस साधना ने मात्र भारत में ही नहीं विदेशों में भी व्यापक स्थान बनाया है।

प्रेक्षाध्यान के अनेक प्रयोग हैं जिनसे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों से निजात पाई जा सकती है। प्रेक्षाध्यान का मूल उद्देश्य आत्मदर्शन और चित्त शुद्धता है। जब चित्त की शुद्धि होती है, तब स्वस्थता की प्राप्ति संभव है।

साध्वीश्री द्वारा लगभग ४५ मिनिट तक कायोत्सर्ग का विशेष प्रयोग करवाया गया। क्लब की मुख्य सदस्या वंदना खटेड़ सहित लगभग ३६ बहनों ने संभागिता दर्ज की। कविता सांड, मीना, सुंदेशा एवं अनिता मूथा सहित सभी बहनों ने अपने अनुभव साझा किए। वंदना खटेड़ ने आभार ज्ञापन किया।

✦ *जो आदमी समता को साध लेता है, वह सुखी रह सकता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

दीपावली प्रकाश का पर्व है

जोधपुर, जाटाबास।

दीपावली पर्व के संदर्भ में साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि दीपावली प्रकाश का पर्व है। दीप की अवली (पंक्ति) नयनाभिराम लगती है। अतः दीया संस्कृति का प्रतीक है। उज्जास, उल्लास एवं सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक है। इस पर्व के दिन स्व परिमाजन किया जाता है अर्थात बाह्य स्वच्छता के साथ भीतर की स्वच्छता भी होनी चाहिए। यह पर्व अनेक प्रसंगों से संपृक्त है।

भगवान महावीर की स्तुति हमारे जीवन में हर मोड़ पर रोशनी बन दिशा का मार्गदर्शन करती रहे। यही मंगलकामना है। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव

कांटाबांजी।

ज्ञानशाला वार्षिक उत्सव के अवसर पर मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आज का यह ज्ञानशाला कार्यक्रम संदेश ग्रहण करने वाला है। ज्ञानशाला में आने वाले बच्चे जीवन में कुछ विशेष प्राप्त करते हैं। ज्ञानशाला में प्राप्त संस्कार जीवन की बुनियाद को सम्यक् बनाते हैं। आज के युग में बौद्धिक ज्ञान का विकास तो बहुत हुआ, लेकिन संस्कारों का विकास कम होता जा रहा है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि हमारे जीवन में जितना महत्त्व श्वास का होता है, उतना ही संस्कार का होता है। बाजी में वटवृक्ष होता है, पत्थर में प्रतिमा होती है, वैसे ही बच्चों में क्षमता, योग्यता होती है। उस योग्यता से प्रोत्साहन, प्रेरणा एवं उपदेश मिलने से जीवन का निर्माण हो जाता है। मैंने स्वयं के जीवन में गृहस्थ अवस्था में प्रतिदिन ज्ञानशाला के माध्यम से ज्ञान अर्जन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ गीत से हुआ। सभा अध्यक्ष युवराज जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पानी, बिजली के अपव्यय से होने वाले नुकसान एवं समस्या की सुंदर प्रस्तुति दी। संस्कारों का अभाव नशे का प्रभाव परिसंवाद, ज्ञानशाला का आकर्षण परिसंवाद को लोगों ने सराहा। गीत की प्रस्तुति हुई। 'मार्डन सास संस्कारी बहू' के संवाद की अभिव्यक्ति हुई। प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, महासभा क्षेत्रीय प्रभारी केशव जैन ने विचारों की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभा द्वारा प्रशिक्षकगण का सम्मान किया गया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को प्रांतीय सभा द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन स्मिता जैन एवं रितु जैन ने किया। आभार ज्ञापन बोबी जैन ने किया।

नैतिक एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम का आयोजन

पाली।

स्कूलों में नैतिक अभियान के तहत बांगड़ रा०उ०मा० विद्यालय बांगड़ स्कूल के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' ने कहा कि वर्तमान शिक्षा बुरी नहीं किंतु अधूरी है। आज से विद्यार्थियों का शारीरिक और बौद्धिक विकास तो हो रहा है, किंतु मानसिक और भावनात्मक विकास नहीं हो रहा है। इसीलिए हिंसा और अपराध बढ़ रहे हैं।

मुनिश्री ने उपस्थित बांगड़ स्कूल ६०० विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प कराया साथ ही स्वस्थ जीवन के लिए मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग भी करवाए।

इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य बसंत परिहार ने स्वागत और आभार प्रकट करते हुए मुनिश्री की शिक्षाओं को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। तेरापंथी महासभा के गौतमचंद छाजेड़ ने नैतिक अभियान की महत्ता बताई। तेममं मंत्री दीपिका बैद मूथा ने मुनिश्री का परिचय दिया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा मंत्री जीतमल पटावरी सहित पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

दो आध्यात्मिक धाराओं का मिलन

चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी का केएलपी अभिनंदन अपार्टमेंट, पट्टालम, चेन्नई में चातुर्मास्य प्रवास के लिए विराजित जैन मूर्तिपूजक संघ के वरिष्ठतम आचार्यश्री नित्यानंद जी महाराज एवं मुनि मोक्षानंद जी के साथ आध्यात्मिक मिलन एवं वार्तालाप हुआ। लगभग ३० मिनट के वार्तालाप में विभिन्न पुरानी स्मृतियों को ताजा किया। दोनों ओर से इस आध्यात्मिक भेंटवार्ता पर विशेष प्रसन्नता व्यक्त की गई।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, उपाध्यक्ष रमेश परमार, मंत्री माणकचंद आच्छा, तेरापंथ सभा सहमंत्री मनोज गादिया, साहूकारपेट ट्रस्ट के मंत्री राजेंद्र भंडारी, अनिल सेठिया एवं मूर्तिपूजक समाज से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रबोधन प्रतियोगिता का आयोजन

जीन्द।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत महासमिति द्वारा 'बदले युग की धारा' पुस्तक पर ओपन किताब अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें जीन्द के ११ भाई-बहनों ने भाग लिया। जिसमें उपासिका कांता मितल, स्वाति गोयल, कुसुम जैन, रेखा जैन, गौरव जैन, गीता जैन, दीपा जैन, सुशीला जैन, विनय जैन, कुणाल मितल, रेणु जैन को उत्तीर्ण घोषित किया गया।

मंगलभावना समारोह के आयोजन

गंगाशहर

मुनि श्री जितेंद्र कुमार जी आदि पांच संतों की मंगल भावना समारोह आयोजित हुआ।

चातुर्मास हेतु आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञा से मुनिवृंद ने गंगाशहर में चतुर्मासिक प्रवेश किया। यह चातुर्मास गंगाशहर में एक नई चेतना जगाने वाला बना। एक ओर जहाँ सामूहिक त्याग, तपस्या, प्रवचन, जाप, अनुष्ठान, मुनिवृंद द्वारा क्षेत्र संभाल आदि से लोगों में एक नई आध्यात्मिक चेतना का संचार हुआ। वही समय-समय पर होने वाले विविध प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों, भजन-संध्याओं, आध्यात्मिक ज्ञान से अभिप्रेरित कार्यक्रमों ने श्रावक समाज में उत्साह की लहर पैदा कर दी।

वयोवृद्ध मुनि शांतिकुमार जी ने कहा कि गुरु दृष्टि की पालना कर इन संतों का यहाँ आना हुआ। पाँचों ही संतों का सुंदर योग मिला। इन्होंने उत्साह, लगन के साथ क्षेत्र को संभाला और हर दृष्टि से श्रमपूर्ण कार्य किया। मैं मंगलकामना करता हूँ, संत निरामय रहते हुए धर्मसंघ की प्रभावना करते रहें।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि यह सफल, सुफल चातुर्मास गुरु कृपा का फल है। मैंने सोचा भी नहीं था की अपनी दीक्षा भूमि पर वह भी २५ वर्षों की संपूर्णता पर मुझे चातुर्मास करने का अवसर मिलेगा। उनकी कृपा से ही मैं कुछ कर सका। सहयोगी संतों का भी मुझे पूरा सहयोग मिला, जिससे यह चातुर्मास निर्विघ्न और सुफल बन सका। साथ ही यहाँ शांति मुनि आदि सभी माइत संतों का भी वात्सल्य भाव, कृपा मिलती रही।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि विमल बिहारी जी, मुनि प्रबोध कुमार जी, मुनि सुधांशु कुमार जी, मुनि अनुशासन कुमार जी, मुनि अनेकांत कुमार जी ने भी अपने विचार रखे। तेममं ने सामूहिक गीत का संगान किया। तेरापंथ किशोर मंडल एवं कन्या मंडल की सदस्याओं ने मंगल भावना में प्रस्तुति दी।

भावाभिव्यक्ति के क्रम में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा से अमरचंद सोनी, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के हंसराज डागा, तेरापंथ न्यास से जैन लूणकरण छाजेड़, तेयुप से अरुण नाहटा, अणुव्रत समिति से राजेंद्र बोथरा आदि कई वक्ताओं ने अपने भाव रखे। सभा मंत्री रतन छलानी ने मंच संचालन किया।

कानपुर

साध्वी डॉ० पीयूष प्रभाजी के चातुर्मास की संपन्नता पर मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोचार से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों ने साध्वीश्री द्वारा प्राप्त संदेशों की सुंदर प्रस्तुति करी। तेमम और तेयुप ने गीतिका के माध्यम से मंगल भावना प्रेषित की।

साध्वीश्री जी के नातीले कनकलता जम्मड, गणेशमल जम्मड, अंशु जम्मड ने कहा कि चातुर्मास की खुशियाँ दोगुनी हो गई जब नातीले महाराज पधारे। तेममं अध्यक्ष शालिनी बुच्चा, मंत्री रश्मि जम्मड, तेयुप अध्यक्ष दिलीप मालू, पंकज सांड, पूनम चंद सुराणा, तेजकरण बुच्चा, दीपिका सुराणा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष टीकम चंद सेठिया, सुधा बुच्चा ने अपनी मंगल भावना कविता, गीतिका तथा वक्तव्य के माध्यम से रखी। सभा मंत्री संदीप जम्मड ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करी तथा संपूर्ण श्रावक समाज की ओर से साध्वीश्री से क्षमायाचना करी। साध्वीश्री ने कहा कि श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण जी ने कृपा करके जब हमारा विहार, बिहार से यूपी की ओर फरमाया तब कानपुर के श्रावक समाज जागरूक हो गए व आचार्यप्रवर से चातुर्मास की प्रार्थना की। गुरुदेव ने मर्यादा महोत्सव पर हमारा चातुर्मास कानपुर फरमाया। सन् २०२२ का चातुर्मास नई बहार लेकर आया। लगभग १० वर्षों के बाद मिले चातुर्मास में हमने श्रद्धाभक्ति की ललक देखी।

कानपुर सभा, तेममं, तेयुप और अणुव्रत समिति द्वारा समय-समय पर केंद्र द्वारा निर्देशित कार्यक्रम हुए। आप लोगों की हमारे प्रति यात्रा की मंगलकामनाओं को स्वीकार करते हैं और साथ ही क्षमायाचना भी करते हैं।

सिकंदराबाद

साध्वी त्रिशलाकुमारी जी का 'मंगल भावना समारोह' तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में मनाया गया। तेममं की अध्यक्षा अनीता गिडिया टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र गौशल, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष महेंद्र भंडारी एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष श्री बाबूलाल बैद ने साध्वीश्री जी के प्रति आगामी विहार की एवं स्वास्थ्य स्वस्थ रहे, ऐसी सभी ने मंगल भावना की।

मंगलाचरण तेममं द्वारा किया गया। प्रेमसुख बैंगाणी, संपत नौलखा कन्या मंडल से मोक्षा, समण संस्कृति संकाय से संगीता गोलछा, ज्ञानशाला परिवार से सीमा दरस्सानी सहित अन्य अनेक जनों ने साध्वीश्रीजी के प्रति आगामी विहार की मंगलकामनाएँ की। ज्ञानशाला परिवार द्वारा गीतिका की प्रस्तुति की गई। आभार ज्ञापन मंत्री सुशील संचेती ने किया। संचालन लक्ष्मीपत बैद ने किया ।

सरदारपुरा, जोधपुर

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा द्वारा साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम कार्यक्रम का मंगलाचरण कन्या मंडल द्वारा किया गया। तत्पश्चात सभी श्रावक-श्राविका समाज ने एक-एक करके अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेममं, कन्या मंडल, सरिता बेद, मीनाक्षी जैन व ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा सुमधुर गीतिका के संगान द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नाटिका प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात गुलाब भंडारी, भंवरलाल भंसाली, सुदर्शन भंसाली, ट्विंकल जैन, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, तेममं अध्यक्ष सरिता कांकरिया, तेयुप सरदारपुरा मंत्री निर्मल छल्लानी, टीपीएफ अध्यक्ष नरेश जैन, सविता तातेड़, ज्ञानशाला संयोजक बी०आर० जैन, प्रेक्षित जैन, मर्यादा कोठारी, चंद्रा कोठारी सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने-अपने वक्तव्य साध्वीश्री के सामने रखे। हंसराज जी मेहता व पूर्ति मेहता द्वारा सुमधुर कविता प्रस्तुत की गई।

साध्वी महकप्रभा जी ने श्रावक समाज को जागरूक होने की बात कही। साध्वी करुणाप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में चातुर्मास में हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा हमने ४० उपनगरों में विचरण कर ४१वें क्षेत्र सरदारपुरा में प्रवास किया तथा गुरुदेव की रास्ते की सेवा करने की प्रेरणा दी।

अंत में सभी साध्वियों ने गीतिका का सुमधुर संगान किया। कार्यक्रम का संचालन विनय तातेड़ ने तथा आभार ज्ञापन महावीर चोपड़ा ने किया।

वाशी

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में वाशी अणुव्रत सभागार में मंगल भावना का भव्य आयोजन हुआ। साथ ही साध्वीवृंद द्वारा नवी मुंबई वाशी प्रतिक्रमण की विशेष आयोजना हुई।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी पंकजश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं सीमंधर स्वामी की स्तुति के साथ हुआ। साध्वीश्रीजी ने नवी मुंबई के चातुर्मास को ऐतिहासिक व सफलता भरी उपलब्धि बताया एवं अपने आराध्य को नमन करते हुए शासनश्री कैलाशवतीजी के संस्मरण को याद करते हुए उन्हें श्रद्धासिक्त अभिवंदना दी।

नवी मुंबई के वाशी में चातुर्मास काल में हुए कार्यक्रमों की गूँज के बारे में बताया व कार्यकर्ताओं के कार्य की सराहना की। साध्वी ललिताश्री जी के साथ साध्वी शारदाप्रभा जी, साध्वी सम्यक्त्वयशा जी ने विशिष्ट प्रतिक्रमण प्रस्तुत किया। जिसमें प्रतिक्रमण की अनेक पार्टियों के साथ कार्यकर्ताओं के उत्साहवर्धन हेतु उनके नाम उल्लेख किए।

मंगल भावना समारोह में वाशी कन्या मंडल की २५ कन्याओं ने एक साथ अणुव्रती बन साध्वी पंकजश्री जी को फार्म भेंट कर प्रथम बार अनोखा इतिहास रचा। कार्यक्रम में तेममं द्वारा मंगलाचरण हुआ।

सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला, चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री महेश बाफना, तेरापंथी सभा, मुंबई कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना सहित अनेक पदाधिकारियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कन्या मंडल, महिला मंडल, ज्ञानशाला, कन्या सुरक्षा योजना प्रभारी अनिता सियाल व एरोली से धीरज बोहरा व तेयुप कोपरखैरना ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। लादूलाल श्रीमाल, अणुव्रत समिति क्षेत्र संयोजक पवन परमार सहित पदाधिकारीगण, सदस्य एवं गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

राकेश राठौड़ ने साध्वीश्री जी की चित्रकला बनाई।

मंगलभावना में नेरुल, कोपरखैरना, सीबीडी खारघर, एरोली, घनसौली, मुलुंड, आदि अनेक क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम का संचालन अर्जुन सोनी ने किया।

आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी ने किया।

पीलीबंगा

साध्वी रचनाश्री जी का पीलीबंगा में चातुर्मास की परिसंपन्नता पर मंगलभावना समारोह जैन भवन में आयोजित किया गया।

मंगल भावना समारोह के अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि साधु-साध्वियाँ तो बहते जल की तरह होते हैं। जिस तरह बहता जल निर्मल होता है, उसी प्रकार गतिमान साधु का जीवन उज्ज्वल होता है।

मंगलभावना के अवसर पर पीलीबंगा की सभी संस्थाओं, तेरापंथ सभा, जैनसभा, महिला मंडल, तेयुप, महासभा सदस्य, प्रेक्षावाहिनी, कन्या मंडल, ज्ञानशाला आदि के पदाधिकारियों के साथ गणमान्य सदस्यों एवं श्रावक समाज ने अपने वक्तव्य एवं तेममं व ज्ञानशाला के शब्दचित्र व गीतिका के माध्यम सभी साध्वीवृंद के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावनाएँ व्यक्त की।

आयोजित कार्यक्रम को दो चरणों में समायोजित किया गया। दूसरे चरण में तेयुप, पीलीबंगा द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। चातुर्मास काल में तपस्या करने वाले तपस्वी भाई रूपेश सुराणा, सौरभ जैन व विनीता डागा का सम्मान किया गया।

शैक्षणिक सम्मान में कक्षा १२वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर रिद्धि जैन, प्राची डाकलिया, तनीषा जैन को सम्मानित किया गया। तेयुप द्वारा आयोजित मेगा ब्लड डोनेशन कैंप के प्रायोजक स्व० धनराज संपतमल दफ्तरी परिवार को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुशीला नाहटा एवं सतीश पुगलिया ने किया।

दिवेर

चातुर्मास में अनेक तरह के कार्यक्रम होते हैं, जिससे श्रद्धालुजन को सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की आराधना करने का अवसर मिलता है। गुरुदेव की कृपा से हमें दिवेर में चातुर्मास करने का मौका मिला यहाँ के लोगों में श्रद्धा भक्ति अच्छी लगी और आगे भी आप लोग सेवा आदि करते रहो, यह मंगलकामना है। यह विचार मुनि संजय कुमार जी ने चातुर्मास की संपन्नता पर तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

इस अवसर पर चातुर्मास की मंगलभावना देने के लिए आसपास के क्षेत्रों में नरदास का गुड़ा, पड़ासली, कांकरोली, राजनगर, छापली, रिछेड़, लाम्बोडी, मुंबई, सूरत आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन समाहित थे। इस अवसर पर रिछेड़ के भीमराज कोठारी सहित अनेक लोगों का सम्मान किया।

भीमराज चंडालिया पड़ासली एवं दिलीप उपाध्याय, ललित लोढ़ा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश श्रीमाल, मंत्री बाबूलाल लोढ़ा, डालचंद सोलंकी, ख्यालीलाल डागा समस्त चंडालिया परिवार आदि तथा ग्राम के सभी महानुभावों ने का चातुर्मास को सफल बनाने में योगदान दिया। सभी का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि दिवेर का चातुर्मास हमें याद रहेगा, यहाँ के लोगों ने अच्छा लाभ उठाया। मुनि धैर्य कुमार जी ने कहा कि हमें एक अच्छा अवसर मिला साधना भी चलती रही, हमारा अध्ययन भी चलता रहा और प्रवचन भी होता रहा।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि यहाँ पर प्रेक्षाध्यान योग के कार्यक्रम भी चले और साथ-साथ हमारे प्रवचन से लोगों में अच्छा बदलाव आया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए ललित लोढ़ा-मुंबई एवं ललित लोढ़ा-दिवेर ने मंगलभावना प्रस्तुत की। तेममं की मंत्री लक्ष्मी सियाल और कन्या मंडल दिवेर ने मंगलभावना प्रस्तुत की।

✦ *समता की साधना के द्वारा आधि और उपाधि से मुक्त हुआ जा सकता है तथा उससे व्याधि की जड़ें भी निर्मूल हो सकती हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ जो व्यक्ति सतत प्रयत्नशील रहता है, जागरूकता के साथ परिश्रम करता है, वह अपने सौभाग्य का निर्माण कर लेता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

युवक सम्मेलन का आयोजन

सरदारपुरा, जोधपुर।

तेयुप, सरदारपुरा द्वारा मेघराज तातेड़ भवन में युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया। साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। साध्वी महकप्रभा जी द्वारा प्रेक्षाध्यान व महाप्राण ध्वनि के प्रयोग कराए गए। तेयुप से सुनील बैद आदि ने विजय गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला द्वारा किया गया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी ने दिया।

साध्वी भव्यप्रभा जी ने कहा कि युवक में हर कार्य करने की क्षमता है, वह अंधकार में प्रकाश की ज्योति जला सकता है, वह निराशा को आशा में बदल सकता है। साध्वी करुणाप्रभा जी ने कहा कि युवकों पर सदैव विशेष दायित्व रहता है, जोधपुर यह धरा नामकरण की धरती है। युवकों के दायित्व की बात होती है, दायित्व निर्वाह के लिए 3C महत्त्वपूर्ण हैं–

(१) Challenge – चुनौती स्वीकार करें।

(२) Control – स्वयं पर व जिह्वा पर नियंत्रण रखें।

(३) Co- operater – करें, सहयोग की भावना रखें।

जयपुर से पधारे मुख्य वक्ता, युवक रतन, राजस्थान सरकार के उद्योग विभाग के संयुक्त निर्देशक राजेंद्र सेठिया ने कहा कि युवक वाह-वाह करना सीखें, टाँग खींचना छोड़कर, हाथ खींचना शुरू कर दें। युवाओं में नशे की लत बढ़ती जा रही है, पर अगर शान से रहना है तो हम नशा छोड़ दें।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि तीन प्रकार की भावनाएँ होती हैं–अधिकार की भावना में सत्ता बोलती है, उपेक्षा की भावना में आलस्य बोलता है, कर्तव्य की भावना में समर्पण बोलता है। कर्तव्य की भावना में व्यक्ति सबका प्रिय बनता है। दायित्व को भार न समझें, स्वयं का कार्य समझकर समय का प्रबंधन करें।

दलपत लोढ़ा ने कहा कि दायित्व दिया नहीं जाता, लिया जाता है। आप लक्ष्य बनाएँ, उसके लिए जी-जान लगा दें, सफलता दूर नहीं रह सकेगी। लक्ष्य के प्रति कटिबद्ध रहे। बाधाओं से घबराएँ नहीं।

अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांश कोठारी ने कहा कि युवक चिंतन से युवा बनें, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उचित प्रयत्न करते रहें, आगे बढ़ते रहें।

कार्यक्रम का संचालन संदीप पटावरी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन नरेंद्र कोठारी, सह-संयोजन अर्पित कोठारी, पंकज डागा ने किया। कार्यक्रम में १०० से अधिक युवकों सहित कुल १५० से अधिक व्यक्तियों की उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने भी युवकों को संबोधित किया।

रजत जयंती समारोह का आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में वरिष्ठ प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ एवं विमला दुगड़ द्वारा लगातार २५ वर्षों से सफलतापूर्वक संचालित किए जा रहे प्रेक्षाध्यान केंद्र अशोक नगर का रजत जयंती समारोह श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन, कांदिवली एवं तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कार्यक्रम के लिए आध्यात्मिक मंगलकामना प्रेषित कर इस केंद्र को व दुगड़ परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश भी प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, मुंबई के कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना, पूर्व अध्यक्ष भंवर कर्णावट, नरेंद्र तातेड़, श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के मंत्री एवं टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी, टीपीएफ मुंबई अध्यक्ष राज सिंघवी, अणुव्रत समिति, मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी, तेममं की अध्यक्षा रचना हिरण सहित बड़ी संख्या में प्रशिक्षण केंद्र के कार्यकर्ताओं सहित संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। उपस्थित सभी का स्वागत महेंद्र नारीचनिया ने किया।

साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा मुंबई के पूर्व अध्यक्ष भवरलाल कर्नावट, मुंबई सभा के कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना, टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं फाउंडेशन के मंत्री मनीष कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान केंद्र अशोक नगर की स्थापना एवं प्रेक्षाध्यान पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। केंद्र की सह-संचालिका विमला देवी दुगड़ ने प्रस्तुति दी। भावनाबेन जोशना बेन सभा के मंत्री अशोक हिरण ने गीतिका प्रस्तुति की। आभार ज्ञापन राजेंद्र सभा के निवर्तमान अध्यक्ष जवेरीलाल नोलखा, पूर्व उपाध्यक्ष मनीष रांका पार्श्वगायक एवं गीतकार रवि मालू जैन तथा अनेक पदाधिकारीगण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। दुगड़ दंपति का नाम गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज हुआ।

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह

राजलदेसर।

दीक्षार्थी मुमुक्षु दक्ष नखत का भव्य वरघोड़ा जुलूस शुभकरण रजत प्रकाश बैद के निवास, सीमेंट रोड से रवाना होकर सुभाष चौक, चोटियाबास, मैन बाजार से होते हुए तेरापंथ भवन में पहुँचा। यहाँ पर साध्वी मंगलप्रभा जी की सन्निधि में दीक्षार्थी भाई की अभिवंदना में मंगलभावना कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम महिला मंडल की तरफ से रीना बैद ने मंगलाचरण किया। साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि वे माता-पिता, पारिवारिकजन धन्य होते हैं जो अपने कलेजे की कोर को गुरु चरणों में समर्पित करते हैं। जो अपने बुढ़ापे की लाठी को गुरु चरणों में समर्पित करते हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि गुरु दृष्टि की आराधना करना, संयम में खूब पराक्रम करना, सुविधावादी मत बनना। कभी पीछे मुड़कर मत देखना। इसके माता-पिता को साधुवाद जिन्हें अपने बेटे का शत-प्रतिशत दान का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर मोनिका बैद ने दीक्षार्थी भाई का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके उज्ज्वल आध्यात्मिक जीवन के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

दीक्षार्थी दक्ष ने भी श्रावक समाज को आह्वान करते हुए कहा कि बच्चे परिवार, समाज व संघ का भविष्य हैं। माता-पिता का फर्ज बनता है कि उन्हें बचपन से ही धार्मिक संस्कार दें। यदि घर में कोई दीक्षा लेने के लिए तैयार हो तो उसे मना न करें।

कार्यक्रम के दौरान तेरापंथी सभा के ट्रस्टी पन्नालाल दुगड़, उपाध्यक्ष खेमचंद बरड़िया, तेममं अध्यक्षा प्रेमदेवी विनायकिया, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, दक्ष के दादीसा मंजु देवी नखत, जगत सिंह बेगवानी, कुणाल बैद, जिया बैद आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वीवृंद ने स्वरचित गीतिका का संगान किया। तेयुप के मंत्री रजत प्रकाश बैद ने आभार ज्ञापित किया। संचालन तेममं की मंत्री सविता बच्छावत ने किया। दीक्षार्थी मुमुक्षु दक्ष नखत का जगह-जगह तिलक लगाकर सम्मान किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

फरीदाबाद।

साध्वी डॉ० शुभप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, फरीदाबाद में टीपीएफ के नए अध्यक्ष राकेश सेठिया एवं कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न हुआ। इसमें टीपीएफ नार्थ जोन अध्यक्ष विजय कुमार नाहटा, टीपीएफ दिल्ली अध्यक्ष राजेश जैन, नोएडा अध्यक्ष प्रसन्न सुराणा एवं गाजियाबाद अध्यक्ष मोहित गोलछा आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

टीपीएफ, फरीदाबाद अध्यक्ष राकेश सेठिया ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए अपनी नई कार्यकारिणी के साथ मिलकर धर्मसंघ एवं टीपीएफ को नई ऊँचाइयाँ छूने का आह्वान किया।

इसके पश्चात नॉर्थ जोन, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद एवं स्थानीय तेरापंथी सभा अध्यक्ष गुलाब बैद ने नई कार्यकारिणी के प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की।

अंत में टीपीएफ के समस्त सदस्यों ने साध्वीश्री जी से मंलगपाठ सुन आशीर्वाद प्राप्त किया।

विराट नशामुक्ति रैली का आयोजन

देशनोक।

अणुव्रत समिति, देशनोक द्वारा विराट नशामुक्ति रैली का आयोजन किया गया। इस विराट नशामुक्ति रैली में देशनोक के ७ विद्यालयों के करीब ३०० बच्चों ने भाग लिया। विद्यालयों के बच्चों के साथ प्रिंसिपल व शिक्षक भी उपस्थित थे। इस विराट नशामुक्ति रैली का शुभारंभ देशनोक नगर पालिका के अध्यक्ष ओम प्रकाश मूंधड़ा ने हरी झंडी दिखाकर किया। देशनोक के तेरापंथ भवन से प्रारंभ होकर गर्ल्स स्कूल, भुरा बास, सांडों का बास, बड़ा गवाड़ होते हुए आंचलिक बास से पुनः तेरापंथ भवन पहुँची।

इस रैली में राजकीय करणी बालिका विद्यालय, भगवान महावीर इंग्लिश एकेडमी, अंबे शक्ति विद्यापीठ संस्थान, शेलम मिशन स्कूल, करणी सुबोध शिक्षालय, विवेकानंद इंटरनेशनल विद्यालय, सज्जन सिंह मेमोरियल ऑफ इग्लिश विद्यालय उपस्थित रहे।

विद्यालय के उपस्थित प्रिंसिपल व शिक्षक को तेरापंथी सभा, देशनोक द्वारा सम्मानित किया गया। अंत में मुनि आकाश कुमार जी एवं मुनि हितेंद्र कुमार जी ने अपने वक्तव्य के द्वारा बच्चों को जीवन में व्यसनमुक्त रहने की तथा जीवन को अच्छा बनाने की प्रेरणा दी।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ

कटक, उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में प्रेक्षा प्रशिक्षक विमल गुनेचा की उपस्थिति में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ तेरापंथ भवन में हुआ। जिसमें ३३ शिविरार्थियों के अतिरिक्त अन्य लोग भी भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में ध्यान का बड़ा महत्त्व है। ध्यान भारतीय संस्कृति की आत्मा है। ध्यान के द्वारा जीवन की दिशा और दशा बदल जाती है। ध्यान संतुलित जीवन जीने की कला है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि ध्यान में एक ध्यान प्रेक्षाध्यान है। प्रेक्षाध्यान आचार्य महाप्रज्ञ जी के उर्वरा मस्तिष्क की देन है। प्रेक्षाध्यान से आचार-विचार, संस्कार, व्यवहार सम्यक् होते हैं। ध्यान से भव के रोग समाप्त हो जाते हैं। मुनिश्री ने भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति मैत्री, मितभाषण, मिताहार के बारे में बताया।

मुनि परमानंद जी ने विचार रखे। उपासक प्रेक्षा प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने योगासन ध्यान, अनुप्रेक्षा आदि के प्रयोग कराते हुए प्रशिक्षण दिया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष हनुमानमल सिंघी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

स्नेह के दीयों से मनाएँ

जयपुर।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा महिला मंडल द्वारा कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि स्नेह के दीयों से दीपावली मनाने का यह सुखद अवसर है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा पूरे भारतवर्ष में इस तरह का यह आयोजन अपने आपमें सराहनीय है।

कार्यक्रम में तेममं, श्यामनगर की अध्यक्ष नीरू पुगलिया, उपाध्यक्ष सुनीता गंग, मंत्री रेखा बोकाड़िया तथा विजयश्री सेठिया तथा अन्य सदस्य और अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल गोलछा, मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा तथा अन्य सदस्य आदि सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित हुए।

आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्मोत्सव के आयोजन

हैदराबाद

आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्म दिवस पर अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में अणुव्रत दिवस पर साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, डीवी कॉलोनी सिकंदराबाद में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें मक्का मस्जिद चारमिनार के मौलवी जनाव मोहम्मद शफिक पाशा साहेब, गुरुद्वारा साहिब सिकंदराबाद के मुख्य ग्रंथी जगदेव सिंह व वेस्ली चर्च सिकंदराबाद के फादर जेम्स सेसिल विक्टर सम्मानित अतिथि के रूप में पधारे।

सम्मेलन का शुभारंभ चांद देवी बैद के गीत से हुआ। अणुव्रत समिति के सदस्यों ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

इस अवसर पर साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि अणुव्रत इंसान को इंसान बनाने की कला है। अणुव्रत मानव को मानवता तक पहुँचाने का श्रेष्ठ उपक्रम है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सबके लिए है, ठीक उसी प्रकार अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम भी सभी के लिए उपयोगी हैं।

अणुव्रत समिति, हैदराबाद के अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी ने स्वागत वक्तव्य के साथ कार्यक्रम में पधारे हुए सभी का स्वागत अभिनंदन किया। अणुव्रत समिति, हैदराबाद की ओर से गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी को इस अवसर पर मौलवी जनाब मोहम्मद शरिफ पाशा साहेब, ग्रंथी जगदेव सिंह व फादर जेम्स सेसिल विक्टर ने अपने-अपने धर्म की सटीक व्याख्या करते हुए कहा कि जो हमारे धर्म के मूल उद्देश्य हैं, वे सभी उद्देश्य इस अणुव्रत आचार संहिता में समाहित हैं। आप सभी ने आचार्यश्री तुलसी को उनके १०९वें जन्म दिवस पर अपनी भावांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मानद मंत्री सुशील संचेती व टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद व तेयुप अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने गुरुदेवश्री तुलसी को अपनी भावांजलि अर्पित की। विजय आंचलिया ने आगंतुक अतिथियों का परिचय दिया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया व समिति के मंत्री अशोक मेड़तवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सहमंत्री विजय आंचलिया, संगठन मंत्री नीरज सुराणा, प्रचार-प्रसार मंत्री रीटा सुराणा, कार्यकारिणी सदस्य कमल बरमेचा सहित अनेक सदस्यों का सहयोग रहा।

जयपुर

आचार्यश्री तुलसी का जन्म दिवस तेरापंथ भवन, विद्याधर नगर में शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में गणाधिपति तुलसी का जन्म दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम साध्वी मधुरेखा जी एवं अन्य साध्वीवृंद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विमल गोलछा, मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा तथा अणुव्रत समिति के सदस्यों, श्रावक-श्राविका समाज द्वारा मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

तत्पश्चात अणुव्रत गीतिका का संगान हुआ। साध्वी मधुरेखा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का जन्म दिवस है। आज के दिन हम सभी आचार्य तुलसी के अवदान अणुव्रत की मनुष्य जीवन में उपादेयता को समझें और अपनाएँ। अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा ने आचार्य तुलसी पर कविता प्रस्तुत की तथा सभी से अणुव्रत दिवस पर छोटे-छोटे व्रतों को अपने जीवन में अपनाने की बात कही।

तपार्चितम् कार्यक्रम का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में 'तपार्चितम् कार्यक्रम' का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से हुई। कन्या मंडल ने गीत का संगान किया। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि पाप-संताप मुक्त करने वाली, तत्काल पवित्र करने वाली उस तप गंगा में स्नान करके पचपन तपस्वी आए हैं। इनका चमकता हुआ नूर नए इतिहास का साक्षी बन रहा है। यह सब गुरु भक्ति और आत्मशक्ति से ही संभव हुआ है।

साध्वी शकुंतला कुमारी जी, साध्वी संचितयशा जी ने प्रातः स्तुति की। साध्वी रक्षितयशा जी ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वी जागृतप्रभा जी ने ध्यान के प्रयोग करवाए। सुमधुर गायक विराग मधुमालती ने तपस्वियों के अभिनंदन के अंतर्गत मधुर स्वर लहरी कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

प्रथम चरण में जैन संस्कार विधि से कैसे दीपावली पूजन दीपमालिका कार्यशाला के आयोजन के संस्कारक अशोक बरलोटा ने विस्तार से पूजन विधि की जानकारी दी।

इस अवसर पर कार्याध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ ने मासखमण तप अभिनंदन पत्र का, तेयुप के अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने देवेंद्र डागलिया को प्रदत्त आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार अभिनंदन पत्र का वाचन किया। महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के मंत्री लक्ष्मीलाल डागलिया ने गायक विराग मधुमालती का परिचय देकर अभिनंदन पत्र से सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ व आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री रौनक धाकड़ ने किया। इस अवसर पर महाप्रज्ञ स्कूल विद्या निधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, अर्जुन सिंधवी, रोशनलाल मेहता आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन, तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, अणुव्रत उपसमिति, दक्षिण मुंबई के कार्यकर्ता का सहयोग रहा।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

अमराईवाड़ी।

तेरापंथ सभा के निर्देशन में ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में सिंघवी भवन में रखा गया। कार्यक्रम में उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय प्रधानाध्यापक डालमचंद नौलखा एवं अतिथि के रूप में क्षेत्रीय संयोजिका लीला सुराणा एवं सह-संयोजिका आशा खाब्या उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। साध्वीश्री जी ने कहा कि यह नन्हे-मुन्ने बच्चे आज इस मंच पर अपनी प्रस्तुति दे रहे हैं, हो सकता है आगे जाकर इसी मंच से बहुत बड़े मंच तक पहुँचें। सभी बच्चों के प्रति मंगलकामना की। साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि छोटे बच्चे तो वह कोरा कागज है, जिस पर हम कुछ भी अंकित कर सकते हैं और यही बचपन के संस्कार जीवन भर बच्चों में अमिट रहते हैं। साध्वी तरुणाप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से बच्चों को संस्कारी होने की बात कही।

सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। डालमचंद नौलखा ने कहा कि इन बच्चों की प्रस्तुतियों से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए, ज्ञानशाला बच्चों में जैन धर्म के संस्कारों को पुष्ट करने का सशक्त माध्यम है। सभा मंत्री गणपत हिरण ने कहा कि ज्ञानशाला से बच्चों के धार्मिक विकास की शुरुआत होती है। लीला सुराणा ने अधिक से अधिक बच्चों को प्रतिक्रमण सीखने की प्रेरणा दी।

पूर्णिया श्रावक, लव-कुश, हनुमान, रावण-सीता, भीकणजी, भारमलजी, तुलसीजी, बाहुबली, दम्यंती, चंदनबाला-महावीर स्वामी आदि के छोटे-छोटे प्रेरक प्रसंगों के साथ बच्चों ने रोचक एवं मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। बच्चों द्वारा ग्रुप डांस, एक्ट एवं संवाद भी प्रस्तुत किए गए।

श्रेष्ठ ज्ञानार्थी वेदिका रांका और श्रेष्ठ प्रशिक्षिका के रूप में कोमल हिरण का चयन किया गया। सभी बच्चों और प्रशिक्षिकाओं को भी सम्मानित किया गया। संचालन संगीता सिंधवी एवं सेजल मांडोत ने किया। आभार ज्ञापन कोमल हिरण ने किया।

फुल मून मेडिटेशन

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथी सभा, रोहिणी के तत्त्वावधान में शरद पूर्णिमा के अवसर पर वास्तु शास्त्री उमेद दुगड़ द्वारा 'फुल मून मेडिटेशन' का अद्भुत प्रयोग करवाया गया।

इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने 'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा' का जप करवाया।

उमेद दुगड़ ने 'फुल मून मेडिटेशन' के अंतर्गत सभी भाई-बहनों को चंद्रमा की तरह दृष्टि रखने को कहा। उन्होंने कहा कि एक मिनिट भी हमारी दृष्टि वहाँ से हटे नहीं। इस ध्यान कक्ष में अनेकों ब्रह्मांडीय ध्वनियाँ भी बार-बार सुनाई दे रही हैं। उसी के साथ ध्यान की गहराई में प्रवेश करने हेतु सजेशन भी चल रहे थे। प्रोजेक्टर के जरिए मून दर्शन करवाकर ध्यान की गहराई में उतरने की कोशिश की गई।

रोहिणी सभाध्यक्ष विजय जैन ने उमेद दुगड़ वास्तु शास्त्री का सभा की तरफ से स्वागत किया। अनिल जैन टोहाना निवासी ने सभी को साधुवाद देते हुए कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष ने उन्हें साहित्य आदि प्रदान कर स्वागत किया।

सामायिक कार्यशाला का आयोजन

अमरनगर, जोधपुर।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में तेयुप, सरदारपुरा द्वारा संस्कारकों की सौगात कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप से जितेंद्र गोगड़ व सुनील बैद द्वारा गीतिका के संगान द्वारा किया गया।

साध्वी शशिप्रभा जी ने सामायिक अनुष्ठान के बारे में कहा कि सामायिक समता की साधना है। समता के भाव से व्यक्ति प्रसन्न रह सकता है। समता की साधना के साथ आवश्यकता है संस्कारों के जागरण की।

साध्वी पुण्यदर्शन जी ने कहानी के माध्यम से बताया कि मानव जीवन की पहचान व्यक्ति के संस्कारों से होती है। कुछ संस्कार नैसर्गिक होते हैं और कुछ ग्रहण किए जाते हैं।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि व्यक्ति में समता के साथ संस्कारों का होना बहुत जरूरी है। भावी पीढ़ी संस्कारवान बने यह भी अपेक्षित है।

दीपावली जप अनुष्ठान के आयोजन

साउथ हावड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा लक्ष्य है ऊँचा हमारा अभियान के तहत दीपावली के महापर्व पर अपने कर्मों की निर्जरा हेतु भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक दिवस को किशोरों द्वारा 'ॐ अ०भी०रा०शि०को० नमः' मंत्र का जाप किया।

परिषद के अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने जप में आए सभी का स्वागत किया। जप में किशोर मंडल के संयोजक संजोग पारख, आशीष बैद सहित अनेक जन उपस्थित थे।

कोयंबटूर

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में दीपावली अनुष्ठान व भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक का आयोजन किया गया।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने भगवान महावीर के निर्वाण के बारे में और भगवान महावीर की जीवनी पर उद्‌बोधन दिया। साध्वी प्रबोधयशा जी ने जप, लोगस्स पाठ व दीपावली अनुष्ठान करवाया। कार्यक्रम में कुल ७० भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

बालोतरा

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में दीपावली अनुष्ठान दीप मालिका भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक पर अनुष्ठान का आयोजन न्यू तेरापंथ भवन में किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

अध्यक्ष निर्मला संकलेचा ने सभी का स्वागत किया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस अनुष्ठान में केंद्र द्वारा निर्देशित प्रारूप के अनुसार जप अनुष्ठान किया गया।

इस अवसर पर परामर्शक नारायणी देवी छाजेड़, पीपी देवी ओस्तवाल, लूणी देवी गोलेच्छा, अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, सहित लगभग ८० बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

✦ स्पष्ट लक्ष्य के साथ जीने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक व सुफल बना सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

बैंगलोर।

अभातेयुप के तत्त्वाधान में एवं तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल, बैंगलूरु द्वारा बैंगलोर स्तरीय किशोर मंडल द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'उड़ान' का आयोजन मुनि अर्हत कुमारजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ।

मुनि अर्हत् कुमार जी ने कहा कि आज हर व्यक्ति एक ही कोशिश में लगा है वह अपना कैरियर कैसे बेहतर बनाए और उस कैरियर को बनाने की अंधाधुंध की दौड़ में वह भूल जाता है अपने करैक्टर का निर्माण और यही भूल उसके पूरे कैरियर को खराब कर देता है। व्यक्ति के कैरक्टर पर ही उनके जीवन की सारी सफलताएँ एवं समृद्धि टिकी हुई हैं। हम संस्कारों की उर्मियाँ बिखेरकर जीवन को ऊर्जावान बनाएँ। उड़ान भरने के लिए सबसे पहले लक्ष्य का निर्धारण करें, उसके बाद पुरुषार्थ को जगाएँ। बुरी संगत न करें, हमेशा मुस्कराते रहें और तनाव से बचें। ऊँची उड़ान भरने के लिए अपनी सोच को सकारात्मक बनाएँ।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में मुख्य वक्ता साजन शाह ने सभी को उद्बोधन दिया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि सभी किशोरों और युवकों को दृढ़ लक्ष्य से आगे बढ़ना चाहिए। सभी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

एक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। सभी किशोर मंडल का सम्मान किया गया। सभी सम्मिलित किशोरों को प्रमाण-पत्र दिया गया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत, परामर्शक विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, किशोर मंडल राष्ट्रीय प्रभारी विशाल पितलिया, तेयुप बैंगलोर अध्यक्ष श्री प्रदीप चोपड़ा, अभातेयुप साथीगण, उपाध्यक्ष सुधीर पोखरना सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन विकास बाबेल ने किया।

तेरापंथ टेलेंट हंट सीजन-८ का ऑडिशन राउंड

हैदराबाद।

तेयुप द्वारा दिवाली स्नेह मिलन के मुख्य आकर्षण तेरापंथ टेलेंट हंट सीजन-८ हेतु ऑडिशन राउंड का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ समाज से उपस्थित ३० से अधिक प्रतिभाओं ने नृत्य, गायन, संगीत व अन्य क्षेत्रों में अपनी कला का प्रदर्शन निर्णायकगण कुणाल कपाड़िया व साइमन के सम्मुख किया।

संदीप छाजेड़, धृति दुगड़ एंड ग्रुप, करण बैंगानी, प्रेरणा सुराणा, कुंजल बोथरा, श्वेता बैंगानी, ट्विंकल दुधोड़िया, रौनक नाहटा, पलक और महक बांठिया, भारती बरड़िया, इन दस प्रतिभागियों का चयन फाइनल राउंड के लिए किया।

तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने निणार्यकगण का स्वागत किया। कार्यक्रम में पधारे टेलेंट हंट सीजन-८ के प्रायोजक आरती सेल्स कॉरपोरेशन से प्रकाश सेठिया, ज्योति इलेक्ट्रिकल से बाबूलाल सुराणा, श्रेय इलेक्ट्रो सेल्स से सुधा दुगड़ तथा सुराणा ग्रुप से दिलीप सुराणा का स्वागत तेयुप पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया।

गौरवशाली विरासत विषयक कार्यशाला

साहूकारपेट।

संस्कृति का सम्मान अपनी विरासत का सम्मान है। संस्कृति समाज की जड़ों को हरा-भरा रखती है। यह विचार साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहे। अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप के आयोजन में 'जैन संस्कार विधि-गौरवशाली विरासत' विषयक कार्यशाला में साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि जैन परंपरा में एक विशाल वटवृक्ष की शाखा है चतुर्विध संघ–साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका। साधु-साध्वियाँ आध्यात्मिक जीवन जीते हैं, उनका मूल लक्ष्य आत्मानुमुखी बनना और औरों को भी प्रेरित कर उस मार्ग पर गतिशील बनाना। श्रावक गृहस्थ जीवन जीता है, परिवार-समाज में रहता है। गृहस्थ जीवन के सामाजिक कार्यों में अपनी संस्कृति का समावेश होना चाहिए। आचार्यश्री तुलसी स्वप्नद्रष्टा थे। उनके अनेकों स्वप्न में एक था–जैन संस्कार विधि। श्रावक समाज अपने हर सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक कार्यों में जैन संस्कार विधि का समावेश करे।

साध्वीश्री जी ने कहा कि संस्कृति से जुड़ने का महान उपक्रम है जैन संस्कार विधि। मोमासर के भोजराज संचेती से प्रारंभ संस्कारों की आज लंबी शृंखला बन गई है। इस अवसर पर तेयुप की आयोजना में उपासक जैन संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुखलेचा ने जैन संस्कार विधि की महत्ता बताई।

इस अवसर पर अभातेयुप पूर्वाध्यक्ष गौतमचंद डागा, तेयुप चेन्नई सहमंत्री कोमल डागा, दिलीप गेलड़ा, तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड, जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री विमल चिप्पड़, ट्रिप्लीकेन ट्रस्ट बोर्ड के मुख्य न्यासी सुरेश संचेती, तेयुप सदस्यों के अलावा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मंगलाचरण अशोक लुणावत ने गीत से किया। 'बने वर्धमान' प्रश्न मंच लिखित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित लगभग सभी ने भाग लिया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री संदीप मूथा ने किया। कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष संतोष सेठिया ने किया।

साइक्लोथोन रैली का आयोजन

विजयनगर।

अभातेयुप एवं किशोर मंडल के निर्देशन में 'लक्ष्य है ऊँचा हमारा' के अंतर्गत साइक्लोथोन रैली का आयोजन तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा तेरापंथ सभा भवन, विजयनगर में चातुर्मास हेतु विराजित मुनि रश्मि कुमार जी के द्वारा मंगलपाठ के श्रवण से शुभारंभ किया गया। किशोर मंडल से संयोजक नमन चावत, आशीष हिंगड़, लक्ष्य चावत, चिन्मय कोठारी, चेतन गांधी, उज्ज्वल बांठिया, रिधम चावत, ऋषभ बाबेल, कुणाल पारख की रैली में सहभागिता रही।

तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा ने रैली को रोड पर सेफ्टी की जानकारी देते हुए रवाना किया। इस अवसर पर तेयुप उपाध्यक्ष विकास बांठिया और मंत्री राकेश पोखरणा उपस्थित रहे।

नवरात्रि पर जाप का कार्यक्रम

रायपुर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल, रायपुर द्वारा नवरात्रि के अंतिम दिन जाप कर आत्म पोषण हेतु विशेष साधना का प्रयोग किया गया, जिसमें किशोर मंडल संयोजक गौरव नाहटा, सह-संयोजक यश डूंगरवाल, किशोर मंडल के सदस्यों अमन महनोत एवं मयंक महनोत ने सहभागिता दर्ज कराई।

थली स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

छापर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा थली स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन परमपूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यशाला अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी स्वामी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुई। मुख्य वक्ता के रूप में सुरेंद्र बोरड़ पटावरी (बेल्जियम) एवं युवा वक्ता वैभव नाहटा (नेपाल) ने उपस्थित युवकों को 'व्यक्तित्व का विकास कैसे हो' पर मोटिवेशनल वक्तव्य दिया।

कार्यशाला के संयोजक मुकेश दुधोड़िया एवं सह-संयोजक नितेश बैद ने पधारे हुए सभी का आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल, तेयुप के साथियों के साथ अनेक श्रावक भी कार्यशाला में उपस्थित रहे।

साइकिल रैली का आयोजन

बालोतरा।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा साइकिल रैली का आयोजन किया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी और मुनि जयेश कुमार जी द्वारा किशोरों को दीवाली के अवसर पर पटाखे नहीं छोड़ने की प्रेरणा के साथ त्याग करवाया।

रैली को तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, तेयुप अध्यक्ष संदीप ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा द्वारा हरी झंडी दिखाकर रैली रवाना की गई। किशोर मंडल प्रभारी आशीष ओस्तवाल, संयोजक आदित्य भंसाली और उप-संयोजक पीयूष बालड़ ने साइकिल रैली के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

साइकिल रैली में करीब ३० किशोरों ने भाग लिया। साइकिल रैली न्यू तेरापंथ भवन मालियों का वास, कंसारो का वास, संभवनाथ चौक, भैरू बाजार, गौर का चौक, नयापुरा, रोड चिल्ली से होते हुए वापस न्यू तेरापंथ भवन पहुँची। इस अवसर पर तेयुप मंत्री नवनीत बाफना, सहमंत्री-प्रथम प्रकाश रांका, महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मेहता, मुस्कान ओस्तवाल व गणमान्य लोग उपस्थित थे।

साइकिल रैली का आयोजन

डोंबिवली।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल, डोंबिवली द्वारा साइकिल रैली का आयोजन किया गया। रैली स्थानीय भवन से शुरु हुई और मानपाड़ा रोड चार रास्ता से होते हुए उपकब गारडा सर्कल से नेहरू मैदान तक हुई। तेयुप के अध्यक्ष ललित मेहता ने सभी को दिवाली के अवसर पर पटाखे नहीं फोड़ने की प्रेरणा दी।

साइकिल रैली में करीब १३ किशोरों ने भाग लिया। साथ ही किशोर मंडल प्रभारी चयन सियाल ने भी सभी को मोटिवेट किया। किशोर मंडल संयोजक ऋषि गुंदेचा, सह-संयोजक कृष चंडालिया, तनिष कोठारी, ध्रुव कोठारी, अर्हम कोठारी, ध्वज गुंदेचा, जय बैंगानी, यगनेश बाफना, हिमांशु बैद, कौशल बैद, मीत धाकड़ की उपस्थिति रही।

दांपत्य शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेमम एवं तेयुप का संयुक्त रूप में दांपत्य शिविर आयोजित हुआ। लगभग ५५ जोड़े इस कार्यशाला में समायोजित हुए। साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यशाला प्रारंभ हुई।

महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना एवं तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने स्वागत एवं अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। इस कार्यशाला की ट्रेनर रही बबीता रायसोनी।

साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि स्त्री परिवार की धुरी है। जिनके बिना परिवार अधूरा है। स्त्रियाँ सम्मान एवं प्यार की हकदार हैं। साध्वी अमितरेखा जी ने अपने विचार रखे। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने गीत एवं साध्वी रत्नप्रभा जी ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। मुख्य वक्ता बबीता रायसोनी ने दांपत्य जीवन को बेहतर बनाने के गुर बताए।

सभा ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, सभा अध्यक्ष छतर सेठिया, तेयुप पूर्व अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेरापंथ टाइम्स के संपादक दिनेश मरोठी आदि पदाधिकारीगण जोड़े में उपस्थित रहे। तेयुप मंत्री विपुल पितलिया का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। आभार ज्ञापन आशा लोढ़ा ने किया।

अपने कल्याण के लिए बनाएँ धर्म को त्राण और शरण : आचार्यश्री महाश्रमण

सुजानगढ़, 10 नवंबर, 2022

साधना के शलाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी आज देवाणी से विहार कर तेरापंथ भवन, सुजानगढ़ पधारे। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का साध्वीप्रमुखा के रूप में प्रथम बार सुजानगढ़ पधारना हुआ है। मंगल प्रवचन में परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी त्राण और शरण पाने का प्रयास करता है कि मुझे कोई त्राण-शरण देने वाला मिल जाए।

शास्त्रकार ने कहा है कि प्रियजन-स्वजन आदि तुम्हारे त्राण और शरण नहीं हैं। तुम भी उनके लिए त्राण और शरण नहीं हो। निश्चय नय और व्यवहार नय से ध्यान देने से ये बातें स्पष्ट हो सकती हैं। जैसे भंवरा काला है, एक व्यक्ति कहता है। दूसरा कहता है कि भंवरा पाँच रंग वाला है। काला भंवरा है, यह हम व्यवहार नय से कह सकते हैं, पर निश्चय नय में भंवरे में पाँचों वर्ण भी हैं।

हमारे धर्मसंघ के छठे आचार्य परमपूज्य माणकगणी ने वि०सं० १६५४ का चातुर्मास सुजानगढ़ में किया था। उस समय अस्वस्थ हो गए थे। इलाज का प्रयास भी किया था पर उन्हें बचाया नहीं जा सका, उनका कार्तिक कृष्णा तृतीया को उसी चातुर्मास में महाप्रयाण हो गया था। इतने शिष्य भी थे पर उन्हें बचा नहीं सके।

व्यवहार में कोई सहयोग कर सकते हैं, पर निश्चय नय में कोई सहयोग त्राण-शरण नहीं दे सकता। प्रश्न है कि तो फिर दुनिया में त्राण-शरण है ही नहीं क्या? किसकी शरण में जाएँ। कहा गया कि जिन धर्म शरण में जाएँ। जब आदमी मरण स्थिति में चला जाता है, तो और कोई शरण नहीं दे सकता।

धर्म अपने आपमें त्राण-शरण है। सारांश यह है कि जीवन में धर्म की आराधना करनी चाहिए। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। अहिंसा माता भगवती है, उसकी आराधना करो। हिंसा से बचें। जीवन में ईमानदारी हो। मैत्री-शांति शरण देने वाले हैं। ईमानदारी परेशान हो सकती है पर परास्त नहीं हो सकती। संतोष भी अपने आपमें धन है। तपस्या से समस्या दूर हो सकती है। समाधान प्राप्त हो सकता है। हम धर्म को त्राण और शरण बनाएँ, यह काम्य है।

सुजानगढ़ पूज्य माणकगणी से जुड़ा है, तो आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी से भी जुड़ा है। युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य महाप्रज्ञ बनाया था। हम धर्म के मार्ग पर बढ़ते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि छापर में पूज्यप्रवर का आकर्षण था कि छापर में ४ दिन भी न रहने वाली बहनें चार महीने उपासना में रही थीं। आचार्यप्रवर के आभामंडल में ऐसी विर्कीणता होती है कि अस्वस्थता दूर हो जाती है। आचार्यप्रवर का छापर चातुर्मास ऐतिहासिक रहा। सुजानगढ़ भी एक ऐतिहासिक स्थल है। आचार्यश्री तुलसी ने विलक्षण कार्य किया था, जो जैन शासन की अद्वितीय घटना थी।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अणुव्रत समिति से महेश तंवर, व्यवस्था समिति से तरुण लोढ़ा, तेयुप से विक्रम डोसी, सभाध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया, ज्ञानशाला, महिला मंडल, कन्या मंडल ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

तनसुख बैद ने पुस्तक–'सुजानगढ़ तेरापंथ का इतिहास' पूज्यप्रवर के कर-कमलों में लोकार्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। सुजानगढ़ की गौरव गाथा को डिजिटल रूप में भी संकलित किया गया है। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

तेरापंथ की राजधानी में हुआ तेरापंथ के महामहिम का पदार्पण

साहित्य से ज्ञान की सुगंध फैलाती रहे जैन विश्व भारती : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, ११ नवंबर, २०२२

तेरापंथ की राजधानी लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती में तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी संपूर्ण धवल सेना के साथ पधारे। १२ किलोमीटर के विहार में आचार्यप्रवर के स्वागत के लिए तेरापंथ समाज एवं अन्य समाज के लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

जन-जन में लोकप्रिय जैन विश्व भारती के प्रांगण से आचार्यश्री तुलसी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि एक महत्त्वपूर्ण चिंतन प्रस्तुत किया गया है, जो अध्यात्म से संबंधित चिंतन है। चिंतन यह है कि यह संसार अध्रुव है। अशाश्वत है, सदा स्थायी नहीं है। एक जीवन है, आदमी को जो अपने आप में अध्रुव है, अशाश्वत है।

संसार की कई स्थितियाँ भी अशाश्वत होती हैं। ये अध्रुव संसार दुःख प्रचुर है। अनेक दुःख इस संसार में आ जाते हैं। ऐसा कौन सा कर्म-आचरण है कि मैं इस दुःख बहुल संसार से आगे दुर्गति में न जाऊँ। इसका उपाय क्या है कि यहाँ भी दुःख न हो और आगे भी दुःख न हो।

वह आचरण समता, राग-द्वेष मुक्ति की साधना है, अध्यात्म की आराधना है। आत्मस्थ होने की प्रक्रिया है, वो हमें प्राप्त हो जाती है, तो संभव है, आगे दुर्गति से बचाव हो सके। धर्म और अध्यात्म ऐसा तत्त्व है, जो प्राणी को दुर्गति से त्राण देने वाला होता है। अच्छे स्थान में जो स्थापित कर दे वो धर्म होता है। धर्म अपने आपमें हमारे लिए त्राण और शरण है।

आज हम जैन विश्व भारती, लाडनूं में आए हैं। यह धर्म से जुड़ा हुआ स्थान है। प्राचीनतम सेवा केंद्र तीर्थ के रूप में है। तखतमल फूलफगर का स्थान, ऋषभद्वार में सभा भवन ऐतिहासिक स्थान है। जैविभा तो कितना धर्म से जुड़ा हुआ है। अनेक सेवाग्राही-सेवादायी संत हैं। समणियाँ व मुमुक्षु बाईयाँ भी हैं। मान्य विश्वविद्यालय भी है। अनेक प्रवृत्तियाँ यहाँ चलती हैं।

गुरुदेव तुलसी का जन्म स्थान लाडनूं है। कितनी चारित्रात्माएँ लाडनूं से धर्मसंघ को प्राप्त हुई हैं। पूज्य डालगणी का तो मनोनयन, पट्टोत्सव व महाप्रयाण भी लाडनूं में ही हुआ था। साध्वीप्रमुखाश्री लाडांजी, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी और साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी भी लाडनूं से हुए हैं। सेवा दी है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने तो तीन-तीन आचार्यों की सेवा की है। उनका अमृत महोत्सव भी यहीं मनाया था। हमने शासनमाता के रूप में उनको स्वीकार किया था। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी की तो समणी दीक्षा व साध्वी दीक्षा भी लाडनूं में हुई थी। ये भी हमारे धर्मसंघ की खूब सेवा देती रहें, यह मंगलकामना है।

जैन विश्व भारती में आना हुआ है। सन् २०२६ का चातुर्मास व २०२७ का मर्यादा महोत्सव जो योगक्षेम वर्ष के रूप में है, यहाँ के लिए घोषित किया है। यहाँ भी खूब विकास होता रहे। मुमुक्षुओं की भी संख्या बढ़ती रहे। शिक्षा-साधना का अच्छा विकास होता रहे। जैविभा ज्ञान की सुगंध फैलाते हुए साहित्य को सामने लाने का प्रयास करती है।

मैं आचार्य भिक्षु एवं आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का स्मरण करता हूँ। हमारी आगे की यात्रा धर्मोद्योत करते हुए अनुकूलता रहे। मैं अपने लिए व साधु-साध्वियों के लिए मंगलकामना करता हूँ। पूज्यप्रवर ने महती कृपा करते हुए मुमुक्षु शुभम सांखला को मुनि दीक्षा ८ दिसंबर को सिरियारी में देने का फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी को यहाँ 'शासनमाता' घोषित किया था। ऐसे गुरु अलौकिक होते हैं। जैविभा में आचार्यप्रवर का पधारना मंगल मानती हूँ। यह तपोमय प्रांगण है। लाडनूं पर हमारे आचार्यों की सदैव कृपा रही है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की कृति 'एक शब्द एक चित्र' जैन विश्व भारती द्वारा पूज्यप्रवर के करकमलों में लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने मंगलभावना पुस्तक के संदर्भ में अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने जैन विश्व भारती के प्रबंधकों को महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के संदर्भ में मंगलपाठ सुनवाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, सभाध्यक्ष प्रकाश बैद, नगरपालिका चेयरमैन रावत खाँ, जोधराज बैद, मोदी परिवार की बहनें एवं जैविभा के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मुमुक्षु शुभम ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बच्चों में हो विनम्रता, ईमानदारी और अहिंसा के संस्कार : आचार्यश्री महाश्रमण

निम्बीजोधा, १४ नवंबर, २०२२

जैन धर्म के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज १५ कि०मी० का विहार कर निम्बीजोधा स्थित स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा है कि आदमी दुःख से मुक्त होना चाहता है तो उसे दुःख-मुक्ति का सही रास्ता पकड़ना-स्वीकार करना चाहिए।

शास्त्रकार ने दुःख मुक्ति का उपाय बताया है–अपने आपका निग्रह करो। आत्मानुशासन अगर आदमी कर ले तो दुःखमुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। ये बहुत उपयोगी और ऊँची चीजें होती हैं।

बाल दिवस बच्चों के संदर्भ में है। बच्चे भी एक संपदा होती है। इस पौध को अमृत सिंचन मिले तो ये पौध एक सुंदर फलदायी वृक्ष के रूप में तैयार हो सकती है। बालकों में अनुशासन निष्ठा हो तो उनमें सुसंस्कार आ सकते हैं। सुंदर कहा गया है–बिना कर्तव्य और अनुशासन के लोकतंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो सकता है।

लोकतंत्र स्वच्छंद-तंत्र न हो जाए। ये लोकतंत्र की प्रणाली है। विद्यालय में बच्चों में ज्ञान का विकास होना चाहिए। संस्कार युक्त शिक्षा हो। विनम्रता, ईमानदारी और अहिंसा के संस्कार हों।

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। बच्चे उनको चाचा नेहरू कहते थे। बाल दिवस पर बच्चों में ऐसी निष्ठा जाग जाए कि हम स्वर्ग को धरती पर ले आएँ। बच्चे अच्छे और सच्चे बनें। आचार्य तुलसी पंडित नेहरू से मिले थे। बच्चों का विकास किसी रूप में देश का विकास हो सकता है। बाल दिवस से प्रेरणा हो कि बच्चों में शिक्षा-दीक्षा अच्छी हो। पूज्यप्रवर ने बच्चों को प्रतिज्ञाएँ करवाई।

स्वामी विवेकानंद गवर्नमेंट स्कूल के प्रिंसिपल सुनील शर्मा ने पूज्यप्रवर का विद्यालय में स्वागत किया। मर्यादा महोत्सव समिति बायतु से मनोज चोपड़ा ने आभार व्यक्त किया व सुनील शर्मा का सम्मान किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हम विष पिलाने वाले को भी अमृत पिलाने का प्रयास करें।

✦ *भविष्य भी उसी का अच्छा बनता है, जिसका वर्तमान अच्छा होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा 13वें दीक्षांत समारोह का आयोजन

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी सहित 86 अध्ययनकर्ताओं को मिली डॉक्टरेट की उपाधि

विद्या के साथ विनय होने से विद्या शोभित होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, १२ नवंबर, २०२२

लाडनूं प्रवास के द्वितीय दिन जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय संस्थान द्वारा पूज्यप्रवर की सन्निधि में दीक्षांत समारोह का आयोजन हुआ। कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल ने समारोह आयोजन करने की अनुमति दी। रमेश मेहता, समणीजी प्रो० ऋजुप्रभा जी ने उपाधि प्राप्तकर्ताओं को आमंत्रित किया।

इस अवसर पर साधना के श्लाका पुरुष, महाज्ञानी, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि उपाधि को प्राप्त करना भी जीवन की एक उपलब्धि होती है। ज्ञान जीवन का एक पवित्र तत्त्व होता है।

आज दुनिया में कितने-कितने विद्या संस्थान हैं, जहाँ विद्या का आदान-प्रदान होता है। विद्या के साथ संस्कार की बात भी रहे। संस्कार युक्त शिक्षा होती है, तो विद्यार्थी और ज्यादा उपयोगी और सक्षम बन सकते हैं। जीवन में विद्या के साथ विनय भी होना चाहिए। विनय से विद्या शोभित हो जाती है।

जैन विश्व भारती संस्थान जिसके प्रथम अनुशास्ता पूज्य गुरुदेव तुलसी व द्वितीय अनुशास्ता पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी थे। उनका इसको आशीर्वचन और संरक्षण प्राप्त हुआ था। इस संस्थान में ज्ञान के साथ संस्कारों का भी विकास हो, इस पर सलक्ष्य प्रयास होता रहे। विद्यार्थियों में सेवा की भावना रहे कि ये देश, धरती और अच्छी बन जाए। स्वर्ग बनाने का प्रयास करें।

मैं आज उपाधि प्राप्त विद्यार्थियों को शिखा पद के द्वारा अनुशासन प्रदान करने का प्रयास करने जा रहा हूँ, जो मूल पाठ आगम आदि का मैं उच्चारण करूँ और हिंदी का उच्चारण विद्यार्थी भी करें। पूज्यप्रवर ने शिखा पद के उच्चारण करवाए। पदों से प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। शुभकामना भी प्रदान कराई कि वे जीवन में और ज्ञान का विकास करें, साथ में आचार और संस्कार पुष्ट रहें।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र व कुलाधिपति अर्जुन राम मेघवाल ने सर्वप्रथम मुख्य मुनि महावीर कुमार जी को डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। बाद में अन्य उपाधि प्राप्तकर्ताओं को उपाधियाँ प्रदान की गई। उपकुलपति बच्छराज दुगड़ ने संस्थान की जानकारी दी।

अर्जुनराम मेघवाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से संसार को बदलने का प्रयास किया था। उन्होंने शिक्षा का महत्त्व बताते हुए उपाधि प्राप्तकर्ताओं के प्रति व जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रति मंगलभावना अभिव्यक्त की। उन्होंने कहा कि नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण पूरे विश्व में सिर्फ जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय ही दे सकता है।

दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि शुरुआत है : कलराज मिश्र (राज्यपाल, राजस्थान)

मुख्य अतिथि कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि शुरुआत है। विद्यार्थी अपने भावी जीवन और समाज व राष्ट्र के कल्याण के लिए सीखे हुए ज्ञान का उपयोग करें। ज्ञान का सार आचार है, यह सूत्र बहुत महत्त्व का है। शिक्षा के अंतर्गत पुस्तकों के पठन-पाठन पर ध्यान दिया जाता है। पुस्तकों के साथ संस्कारों का भी शिक्षण प्राप्त करें। सीखना ही शिक्षा का विज्ञान है। जैविभा संस्थान ज्ञान का महान केंद्र बने। मैंने संविधान वाटिका की शुरुआत की है। यह विश्वविद्यालय यदि संविधान वाटिका को शुरू करता है, तो सोने में सुहागा जैसा होगा। छोटे से गाँव में आचार्य तुलसी की दृष्टि से ये विशाल संस्थान स्थापित किया है। यह संस्थान जीवन मूल्यों की शिक्षा देता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**